द्वारा तैयार

हज़रत पैगंबर मुहम्मद पति के रूप में

द्वारा तैयार

हज़रत पैगंबर मुहम्मद पति के रूप में

विषयसूची

हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो- अपनी पवित्र पत्नियों के साथ किस तरह व्यवहार करते थे? 6

पवित्र पत्नियों के साथ नरमी और प्यार पत्नी के साथ प्यार के प्रकटन का एक तरीक़ा 8

पत्नी के लिए बनना संवरना और सुगंध लगाना 14

अल्लाह के दूत -उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- का सुंदर स्वभाव 17

हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- का अपनी पवित्र पत्नियों की ओर से दुखौं पर धैर्य 22

हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- की अपनी पत्नियों के प्रति वफादारी 25

हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- का अपनी पत्नियों के बीच बराबरी करना 28

हज़रत पैगंबर -उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने पुरुषों को अपनी पत्नियों के साथ अच्छा बर्ताव करने की सलाह दी 34

हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-का अपनी पत्नियों के साथ प्यार मोहब्बत - 1 39

हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-का अपनी पत्नियों के साथ प्यार मोहब्बत - 2 49

हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-का अपनी पत्नियों के साथ प्यार मोहब्बत - 3 53

हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो- अपनी पवित्र पत्नियों के साथ किस तरह व्यवहार करते थे?

हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-अपनी सभी पत्नियों को ख़ुशी और सुख दिया करते थे । क्योंकि वह महिला के साथ व्यवहार के नियमों को अच्छी तरह जानते थे। वह सदा धर्म और संसार के कामों पर उनकी सहायता करते थे।

उनकी पवित्र पत्नियां और हमारी मोमिन माएं कैसी थीं यह एक प्रश्न है ? जिसका उत्तर यह है कि यदि हम हज़रत मुहम्मद-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो- की ज़िंदगी और हज़रत मुहम्मद-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो- की पवित्र पत्नियों पर लिखी गई पुस्तकों को खोलते हैं तो हमें पता चलता है और उन पुस्तकों में समान रूप से यही मिलता है कि वे सब के सब रातों में बहुत प्रार्थना करने वालियां और रोज़ा और उपवास का ख्याल रखती थीं। उन सब को अल्लाह से अत्यंत निकटता प्राप्त था और वे अल्लाह की बहुत इबादत करती थीं। इसी कारण उन्हें इस महान सम्मान के साथ सम्मनित किया गया था। उनको यह सम्मान मिला की सारे विश्वासियों की माता कहलाईं। और इस जीवन में भी हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो- की पवित्र पत्नियां बनीं और इसके बाद आखिरत में भी हमारे प्रिय पैगंबर हज़रत मुहम्मद मुस्तफा-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो-की पत्नियां होंगी। वास्तव में उन्होंने अपने और अपने पालनहार के बीच के संबंध को ठीक और शुद्ध कर लिया था तो अल्लाह सर्वशक्तिमान ने उनके सांसारिक और आखिरत के कामों को ठीक कर दिया।

लेकिन अब हमारी बहनों और हमारे भाइयौं की स्तिथि क्याहै?

मुझे पता है कि मेरे इस लेख को पढ़ने वालों में कुछ लोग विवाहित होंगे और कुछ लोग अविवाहित होंगे लेकिन अविवाहित भी अपने माता पिता और रिश्तेदारों और दोस्तों को देख कर वैवाहिक जीवन की बहुत सारी बातों को जानते होंगे। यहाँ प्रश्न उठता है कि हमारे इस समय में वैवाहिक जीवन की खुशिया क्यों दुर्लभ हैं ? क्या ख़ामी और कमी हमारे ज़माने में है? नहीं, बल्कि वास्तव में कमी तो पुरुषों और महिलाओं समेत हम लोगों में है।

तथ्य यह है कि हमने इस जीवन को भौतिकवाद संस्कृति के द्वारा बर्बाद कर के रख लिया है। हमने अपने धर्म, अपनी इस्लामी सभ्यता कोभुला दिया , और हम हज़रत पैगंबर-उन पर इश्वर की कृपा और सलाम हो- की शिक्षाओं से दूर हो गए। हम अल्लाह के प्यार से दूर होगए और सार्वजनिक रूप से और खुलेआम पापों में डूब गए। हम पाप

करते समय लोगों की आँखों से तो छिप जाते हैं लेकिन क्या हमारे दिल को एक पल के लिए अल्लाह से डर नहीं रहता है और हमारी आँख को शर्म नहीं आती है, जबकि तथ्य यह है कि अल्लाह हमें देख रहा है।

फिर, अब हमें क्या करना चाहिए जिसके द्वारा हमारे वैवाहिक जीवन में खुशी वापस आ सके ?

इस के लिए केवल एक ही रास्ता है, वह है अल्लाह और उसके पैगंबर का रास्ता। इस के द्वारा ही प्रत्येक पति अपनी पत्नी का आनंद ले सकता है और वैवाहिक जीवन में खुशी का अर्थ पा सकता है और उस आनंद को पा सकता जो अल्लाह सर्वशक्तिमान ने वैवाहिक जीवन में रखी है। सच तो यही है कि हम अपनी मूर्खता के कारण उस खुशी से हट गए और उसे खो बैठे।

प्रिय भाइयो और बहनो! इसी कारण मैंने इस सीरीज़ के विषय में सोचा कि “हज़रत पैगंबर एक पति के रूप में” के विषय पर एक लेख पेश करूँ और हर उस पति और पत्नी के लिए उपहार मैं इसे प्रस्तुत करूँ , जिनके बीच दूरी पैदा हो गई और जो एक बार फिर एक दूसरे के साथ प्यार को बहाल करना चाहते हैं। मुझे आशा है कि आप मेरी इस सीरीज़ को पढेंगे और उस से लाभ लेंगे।

अल्लाह आपको भला बदला अनुदान करे।

हे अल्लाह हमारे प्रमुख हज़रत मुहम्मद पर और उनके परिवार, संतान और साथियों पर आशीर्वाद उतार और बहुत बहुत सलाम भेज।

पत्नी के साथ प्यार के प्रकटन एक तरीक़ा यह भी है कि उनको उनके सबसे अधिक प्रिय नाम से पुकारा जाए या उनके नाक को छोटा और संक्षिप्त करके प्यार से पुकारा जाए।जैसा कि हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- हज़रत आइशा –अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- के साथ किया करते थे।एक शुभ हदीस में है कि हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- ने हज़रत आइशा को यह कह कर संबोधित किया:" ए आइश! यह जिबरील हैं आपको सलाम कर रहे हैं, हज़रत आइशा ने कहा:"तो मैं 'वअलैहिस-सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह'(और उनपर भी सलाम हो और ईश्वर की कृपा और उसकी दया और उसकी बरकत हो) आप तो वह देखते हैं जो मैं नहीं देख सकती।मतलब हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- जो देखते हैं वह तो मैं नहीं देखती हूँ।इस हदीस को हज़रत आइशा ने कथित किया और यह हदीस सही है , बुखारी और मुस्लिम दोनों इस 'हदीस'के सही होने पर सहमत हैं।देखिए हदीस नमबर:२४४७।

वह हज़रत आइशा को 'ए हुमैरा' भी कहकर संबोधित करते थे।'हमरा' और 'हुमैरा' अरबी में गोरी महिला को कहते हैं।जैसा कि इब्ने कसीर ने 'अन-निहाया' नामक पुस्तक में उल्लेख किया है।और इमाम ज़हबी ने कहा हिजाज़ के लोगों की भाषा में 'हमरा' ऐसी गोरी महिला को कहते हैं जिसके गोरे रंग में लाली शामिल हो और यह रंग उन लोगों में बहुत कम पाया जाता था।इसका मतलब यह है कि वह उन्हें उनके सुंदर नामों के द्वारा पुकारते थे और प्यार से उनके नामों को छोटा और संक्षिप्त करके पुकारते थे।

इमाम मुस्लिम ने रोज़ा के बारे में हज़रत आइशा –अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- की हदीस को उल्लेख किया है, हज़रत आइशा –अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- ने कहा:"हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- अपनी पत्नियों में से किसी को चूमते थे जबकि वह रोज़ा में होते थे।यह सुना कर हज़रत आइशा –अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- हँसती थी।"

इस हदीस को हज़रत आइशा ने कथित किया और यह हदीस सही है , इमाम मुस्लिम ने इसे उल्लेख किया है।देखिए हदीस नमबर:११०६।

हज़रत आइशा –अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- के द्वाराही कथित है कि हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- ने कहा:"विश्वासियों के बीच सब से अधिक पक्का विश्वासवाला वह है जिसके शिष्टाचार सब से अच्छे हैं और जो अपनी पत्नी पर

सब से अधिक दयालु है ।इस हदीस को इमाम तिरमिज़ी ने हज़रत आइशा –अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-से उल्लेख किया है ।यह हदीस सही है देखिए 'सुनने तिरमिज़ी' हदीस नमबर:२६१२।

इन हदीसों से यह बात खुल कर हमारे सामने आ जाती है कि हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- अपनी पवित्र पत्नियों का बहुत खयाल रखते थे विशेषरूप से हज़रत आइशा–अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-का और उन सब के साथ बहुत सुंदर बर्ताव करते थे ।प्यार और लाड में उन्हें खाना खिलाना भी शामिल है, इस संबंध में हज़रत सअद बिन अबू-वक़्क़ास से कथित है उन्होंने कहा:" हज़रत पैगंबर-उन पर

ईश्वर की कृपा और सलाम हो- मेरे पास तीमारदारी करने के लिए आए जब मैं पवित्र मक्का में था और सअद को उस धरती पर मारना नापसंद था जहां से स्थलांतर कर चुके थे तो हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- ने कहा:" अल्लाह अफरा के बेटे पर दया करे ।"हज़रत सअद कहते हैं मैंने कहा:" हे अल्लाह के दूत मैं अपने पूरे धन को दान कर देना चाहता हूँ तो उन्होंने कहा:" नहीं" तो मैंने कहा:" तो फिर आधा धन " तो उन्होंने कहा:" नहीं" तो मैंने कहा:" तो फिर मेरे धन का तीसरा भाग " तो उन्होंने कहा:" तीसरा भाग(ठीक है) और तीसरा भाग भी बहुत है, निसंदेह यदि तुम अपने उत्तराधिरियों को अमीर छोड़ोगे तो यह अच्छा है कि तुम उनको ग़रीब छोड़ दो और वे लोगों के सामने अपना हाथ फैलाएं ।निसंदेह तुम जो भी खर्च करोगे तो वह दान ही होगा यहां तक कि तुम खाने का जो कौर अपनी पत्नी के मुंह तक उठाते हो

(वह भी दान है)।हो सकता है कि अल्लाह तुमको उठा लेगा और कुछ लोगों को तुम से लाभ हो जाए और कुछ लोगों की क्षति हो जाए ।" उस समय हज़रत सअद को केवल एक ही बेटी थी ।इस हदीस को हज़रत सअद ने कथित किया और यह हदीस सही है , बुखारी ने इसे उल्लेख किया है ।देखिए हदीस नमबर:२४४७।

जी हाँ वह खाने का लुक़मा जो अपनी पत्नी के मुंह तक अपने हाथ से पहुंचाते हैं वह भी एक दान है, केवल पत्नी का दिल जीतना और पत्नी की सहायता ही नहीं हैं बल्कि एक दान है जिस पर पति अल्लाह सर्वशक्तिमान की ओर से पुरस्कार से पुरस्कृत किया जता है।

इस से पता चला कि पत्नी से लाड और प्यार का एक तरीक़ा उसे खाना खिलाना भी है ।जी हाँ इस का पत्नी के दिल पर ज़बरदस्त भावनात्मक प्रभाव पड़ता है।तो मेरे भाई! हे मनुष्य! ज़रा सोचिए इस काम मैं आपका क्या ख़र्च होता है? इस में कुछ ख़र्च नहीं होता है बल्कि इस से तो हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-के उदाहरण पर भी अमल हो जाता है और इस पर अल्लाह सर्वशक्तिमान की ओर से अच्छा पुरस्कार भी प्राप्त हो जाता है और पत्नी की सहायता भी हो जाती है और उसके दिल के भी आप मालिक हो जाते हैं ।लाड प्यार हंसी मज़ाक़ करने का धर्मशास्त्र ने आपको आदेश दिया है क्योंकि इस से दिल मिलते हैं और प्यार का वातवरण बनता है।

हम अक्सर प्रिय पैगंबर हज़रत मुहम्मद -उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- की जीवनी के बारे में पढ़ा करते हैं धर्म शिक्षा, राजनैतिक, सैन्य या आर्थिक क्षेत्र में बहुत कुछ हमें पढ़ने को मिलता है ।लेकिन हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- की जीवनी के बारे में और वह अपने घर में कैसे रहते थे? और अपनी पत्नियों के साथ उनके संबंध की प्रकृति क्या थी? इन विषयों पर कम ही लिखा जाता है और कम ही प्रकाशित किया जाता है ।जबकि सच तो यही है कि प्यारे मुहम्मद -उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-की जीवन के परिवारिक संबंधों के क्षेत्र में शोध करने वाला व्यक्ति बहुत सारी ऐसी अनमोल बातें पा लेता है जिनकी हमको हमारी समकालीन वास्तविकता में सख्त ज़रूरत है।यदि हमको उनका ज्ञान होता तो उनका हमारे घरों की स्थिरता के लिए और हमारे वैवाहिक संबंधों को मज़बूत बनाने में बड़ा योगदान होता ।हम इस लेख में कुछ उदाहरण देंगे और बताएँगे कि हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- अपनी पवित्रपत्नियों की भावनाओं का कैसा सम्मान करते थे ? और उनको कितना चाहते थे ?

भावनाओं को व्यक्त करने में मर्दों की प्रकृति महिलाओं की प्रकृति से जुदा और अलग

होती है , क्योंकि अगर एक औरत अपनी भावनाओं को व्यक्त करना चाहती है तो वे बात करती हैं और कहती हैं कि मैं आप से प्यार करती हूँ या मैं आपको बहुत चाहती हूँ, मुझे आपकी ज़रूरत है, मैं आपको बहुत मिस याद करती हूँ ।और पत्नी अपने पति को अक्सर ऐसे शब्द कहा करती हैं ।लेकिन मर्द की प्रकृति यह है कि अगर वह अपनी भावनाओं को व्यक्त करना चाहता है तो अपने कामऔरउत्पादन के द्वारा व्यक्त करता है ।बात कम ही किया करता है ।मर्द जब अपनी पत्नी को बताना चाहता है कि वह उससे प्यार करता है, तो वह उन्हें कुछ खरीद देता है या खाने पीने की चीज़ें घर पर मंगवा देता है या कुछ फर्नीचर दिला देता है ।और पुरुष इन जैसे कामों के द्वारा प्यार व्यक्त करता है ।

निश्चित रूप से आदमी में यह एक नकारात्मक स्वभाव है।इसी कारण हमारे सम्मानित पैगंबर हज़रत मुहम्मद-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- ने इस स्वभाव को त्याग दिया ।और वह हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- के लिए अपने प्यार और मोहब्बत को जताते थे ।इस का मतलब यही है कि वह अपना लाड और प्यार सामने रखते थे और उनको वह सब कुछ सुनाते थे जो एक पत्नी अपने पति और प्रेमी से सुनना चाहती हैं।वास्तव में यह पति और पत्नी के बीच बर्ताव का एक ऊँचा मक़ाम है ।इब्ने असाकिर ने हज़रत आइशा- अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- से कथित किया , हज़रत आइशा- अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- ने कहा कि हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- ने उनसे कहा:" क्या तुम इस बात से संतुष्ट नहीं हो कि तुम दुनिया और आखिरत दोनों में मेरी पत्नी रहो।हज़रत आइशा- अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- कहती हैं:"मैंने कहा: क्यों नहीं तो उन्होंने कहा:तो फिर तुम दुनिया और आखिरत में मेरी पत्नी हो ।"

यह हदीस हज़रत आइशा से कथित है और सही है , इसे अल्बानी ने सही कहा ।देखिए "अल सिलसिला अल सहीहा" पेज या संख्या नम्बर: 2255।

अब आप ही बताइए कि हज़रत आइशा- अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- की भावना कैसी रही होगी? और इन शब्दों को सुनकर उनकी मनोवैज्ञानिक स्तिथि कैसी ज़बरदस्त हुई होगी? विशेष रूप से जब वह उनको अपने शब्दों के द्वारा सुरक्षा, प्यार और दुनिया व आखिरत में साथ राहने का वचन दे रहे थे ।

यह देखिए अल-आस इब्न रबीअ को जो हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- की बेटी हज़रत ज़ैनब के पति थे वह इस्लाम से बचने के लिए मक्का से बाहर चले गए थे, हज़रत ज़ैनब ने मक्का लौटने के लिए बोली और इस्लाम में प्रवेश करने का

बुलावा उनके पास भेजी।तो उनके जवाब में वह एक पत्र भीजे थे।पत्र कुछ इस तरह था: “ईश्वर की क़सम! आपके पिताजी मेरे नज़र में संदेहात्मकनहीं हैं।हे हबीबा! मुझे तो यह बात बहुत अधिक पसंद है कि मैं भी उसी वादी में रहूँ जिस में तुम हो, लेकिन मुझे इस बात से नफरत है कि यह कहा जाए देखो तेरे पति ने तो अपने लोगों को धोखा दिया? तो क्या तुम मेरी मजबूरी को समझ रही हो और तथ्य को जान रही हो।” इस पत्र से स्पष्ट है कि अल आस हज़रत ज़ैनब को बहुत चाहते थे, इसका सबूत यह है कि वह उनके साथ एक ही रास्ता और एक ही वादी में रहना चाहते थे , चाहे वह रास्ता कोई भी हो लेकिन उनको यह बात अच्छी नहीं लग रही थी कि हज़रत ज़ैनब को उनके पति को लेकर ताना मारा जाए और उनको दुख हो ।फिर उन्होंने अंत में मजबूरी समझने और स्वीकार करने की विनती की।इसी प्यार के कारण हज़रत ज़ैनब उनके पास गई और उन्हें मुसलमान बना कर वापिस लेकर आईं।

कुछ लेखकों ने पश्चिम में महिलाओं के सम्मान का सबूत देते हुए कहा है कि वहां तो पति अपनी पत्नी के लिए कार का दरवाज़ा खोलता है।हालांकि यह तो ज़ाहिर में एक सम्मान है ।लेकिन वहां बहुत सारे ऐसे पहलू पाए जाते हैं जिनसे एक पक्का आदमी को पता चल जाता है कि वे वास्तव में महिलाओं का अपमान करते हैं उन्हें बिल्कुल सम्मान नहीं देते हैं।हम मुसलमानों के यहां तो पुरुषों और महिलाओं के बीच टकराव का मुद्दा है ही नहीं, बल्कि हमारे पास तो हर एक दूसरे का पूरक है, और हम तो यही कहते हैं कि सम्मान दोनों तरफ से और दोनों केलिए आवश्यक है ।इसके उदाहरण में हम प्यारे मुहम्मद-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- को पेश करते हैं ।जब उनकी पत्नी श्रीमती सफिय्या उनके पास मिलने आई थीं जब वह रमज़ान के पिछले दस दिनों में

(मस्जिद में) एतेकाफ़ में थे, कुछ देर तक वह उनके साथ बातचीत की और उसके बाद जाने के लिए उठीं तो हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-भी उनको वापिस छोड़ने के लिए उठे और दरवाज़े तक गए ।एक दूसरे कथन में है कि हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- ने उन्हें कहा:” जल्दी मत करो मैं भी तुम्हारे साथ आ रहा हूँ।उनका घर ओसामा के घर के पास था तो हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- उनको घर तक छोड़ने के लिए बाहर निकले तो उन्हें अनसार के दो आदमी मिले , वे दोनों हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- को देख कर जल्दी से वहां से गुज़रने लगे इस पर हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- उन दोनों को बोले: तुम दोनों आओ , यह तो सफिय्या बिनते हुयेय हैं ।अनसार के दोनों व्यक्तियों ने कहा:”सुब्हानल्लाह (पवित्रता है अल्लाह को) ऐ अल्लाह के दूत!” तो हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- ने

कहा:” निस्संदेह शैतान तो मनुष्य के खून के रग में दौड़ता है ।और मुझे डर लगा कि कहीं वह (शैतान) तुम्हारे दिलों में कुछ डाल न दे ।यह हदीस हज़रत सफिय्या बिनते हयेय से कथित है और सही है , बुखारी ने इसे उल्लेख किया है ।देखिए पेज या संख्या नमबर: 2038।

इस लिए हमें आशा है कि पतियों और पत्नियों के बीच सम्मान का वातावरण बना रहे , क्योंकि सम्मान ही वैवाहिक प्रेम और परिवारिक स्थिरता की कुंजी है।

विवाहित जीवन क्या ही सुंदर है अगर दोनों इस मानसिकता के साथ बर्ताव करें! और कितनी ही आवश्यकता की बात है कि हम इस्लामी इतिहास और हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- के जीवन के पन्नों को खोलें ताकि हमें वैवाहिक प्यार के कला के बारे में सबसे सुंदर सिद्धांत हमें मिल सकें।

हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-से पूछा गया कि हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- जब अपने घर में प्रवेश करते थे तो किस चीज़ से शुरू करते थे तो उन्होंने कहा:मिस्वाक से।

यह हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-से कथित है, और यह हदीस सही है, यह हदीस इमाम मुस्लिम द्वारा उल्लेख की गई देखिए पेज या संख्या नमबर:253।

कुछ विद्वानों ने यहाँ एक बहुत बारीक वैज्ञानिक बात कही है। उनका कहना है कि शायद हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो मिस्वाक इसलिए करते थे ताकि अपनी पवित्र पत्नियों का चुंबन के द्वारा स्वागत कर सकें।

और इमाम बुखारी ने उल्लेख किया है कि हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-ने कहा: “मैं हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-को सबसे अच्छी खुशबू लगाया करती थी जो मुझे मिल सकती थी यहां तक कि मैं उनके सिर और दाढ़ी में खुशबू के चिन्ह पाती थी। यह हदीस हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-से कथित है, और यह हदीस सही है, इसे इमाम बुखारी ने उल्लेख किया, देखिए सहीह बुखारी, पेज या संख्या नमबर:५९१८।

बुखारी में ही यह भी उल्लेखित है कि हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-ने कहा:मैं अल्लाह के पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- के सिर में कंघी

करती थी जब मैं माहवारी में होती थी।

इस हदीस में एक शब्द "उरज्जिलु" أرجل है जिसका अर्थ है: मैं उनके बालों को संवारती थी।

इमाम मालिक से बयान करनेवाले सारे लोगों के शब्द यही हैं। और इसे अबू-हुज़ाफा ने अबू-हिशाम से यूँ उल्लेख किया कि वह हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- के सिर को धोया करती थी जब वह मस्जिद में ही रहते थे तो वह अपने सिर को इनकी ओर बाहर रखते थे और हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- माहवारी के समय में होती थी। इसे दारुक़ुतनी ने भी उल्लेख किया है।

इन हदीसों और इन के इलावा और भी बहुत सारी हदीसों से यह बात स्पष्ट होती है किहज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- धर्मशास्त्र के सीमा में रह कर साफसुथरा रहने और अपने रूप-रंग को संवार कर रखने का ख्याल रखते थे और यह बात अल्लाह सर्वशक्तिमान को भी पसंद है।लेकिन आजकल बहुत सारे मर्द इस का उल्टा काम करते हैं और हो यह रहा है कि या तो बहुत ज़ियादा बनते सवंरते हैं या फिर बनने सवँरने पर बिलकुल ध्यान ही नहीं देते हैं बल्कि अपनी पत्नियों के लिए भी नहीं बनते सवंरते हैं। कुछ लोग तो अजीब और बेढंगा काम भी कर गुज़रते हैं,बनने सवंरने का तो बहुत ख्याल रखते हैं लेकिन फिर भी उनके पास से गंध उठ रहा होता है और वह है धूम्रपान का गंध जो बिलकुल सड़ा हुआ और गंदा गंध होता है, फिर हे प्रिय भाई! आपकी सफाई और सुथराई कहाँ रही? यह तो एक तरफ है दूसरी तरफ यह होता है कि बनने संवरने में बहुत अजीब लापरवाही और कोताही बरती जाती है और लोग पोशाक में बेढंगापन अपनाते हैं और बालों को जैसे तैसे छोड़ देते हैं, नाखून, मूंछें, कांख और अप्रिय बालों को न काटते हैं और न साफ़ करते हैं। और इस तरह गंध में पड़े रहते हैं। याद रहे कि अच्छाई बल्कि सारी अच्छाई और भलाई इसी में है कि बनने संवरने में और नाकनक्शा सही रखने में हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-का तरीक़ा अपनाया जाए।और यह तो महिलाओं का अपने पति पर एक वैध अधिकार है और उसके दिलों को जीतने और उनके प्यार को पाने का सुनिश्चित रास्ता है कियोंकि आत्मा की प्रकृति में यह शामिल है कि वह सफाई सुथराई और सुंदरता को पसंद करती है। आइए ज़रा हम पहले के मुसलमान पूर्वजों-अल्लाह उन सब से प्रसन्न रहे- के विषय में सुनते हैं कि वे इन बातों का कितना ख्याल रखते थे।

इब्न अब्बास –अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- ने कहा:मैं अपनी पत्नी के लिए उसी तरह संवरता हूँ जैसे वह मेरे लिए संवरती है और मैं उनपर के अपने सारे अधिकार को पूरा

पूरा नहीं लेना चाहता हूँ (क्योंकि यदि मैं ऐसा लूँगा) तो वह भी मेरे ऊपर के सारे अधिकार की मांग करेगी क्योंकि अल्लाह सर्वशक्तिमान ने कहा है :”

(ولهن مثل الذي عليهن بالمعروف)

(और उनके लिए भी सामान्य नियम के अनुसार वैसे ही अधिकार हैं जैसी उनपर ज़िम्मेदारियाँ हैं।)

खलीफा हज़रत उमर के पास एक आदमी आया उसके बाल बिल्कुल उलझे थे वह पूरा के पूरा धूल में भरा था उस आदमी के साथ उसकी पत्नी भी थी जो कह रही थी :न यह मेरे साथ रहेगा और न मैं इसके साथ रहूंगी न यह मेरे साथ रहेगा मतला वह उससे नफ़रत करती थी।न मैं इसके साथ रहूंगी न यह मेरे साथ रहेगा, लेकिन प्रश्न यह है कि आखिर बात क्या थी? सुनिए! हज़रत उमर को लगा कि पत्नी अपने पति से नफ़रत करती है इसलिए उन्होंने उस आदमी को कहा: जाओ पहले सिर का बाल कटवाओ और नाखुन काटो और स्नान करो, जब वह यह सब कुछ कर के वापिस आया तो उन्होंने उसे अपनी पत्नी के सामने जाने केलिए कहा जब वह उसके पास गया तो वह पहचान नहीं सकी और दूर हट गई फिर वह पहचान गई और उसे स्वीकार कर ली और अपने मुक़द्मा को वापिस ले ली।जी हाँ तलाक़ लेने से रुक गई, इस पर हज़रत उमर ने कहा: उनके साथ इसी तरह किया करो, अल्लाह की क़सम उनको भी तुम्हारा बनना संवरना उसी तरह अच्छा लगता है जिस तरह उनका बनना संवरना तुम को अच्छा लगता है।याह्या इब्न अब्दुररहमान अल-हनज़ली ने कहा: मैं मुहम्मद बिन अल-हनफिय्या के पास आया तो वह एक लाल रंग की चादर ओढ़े हुए निकले और उनकी दाढ़ी से (ग़ालिय्ह) खुशबू के बूंद टपक रहे थे।याद रहे कि “ग़ालिय्ह” कई प्रकार के खुशबुओं का मिक्स्चर हुआ करता था बल्कि सब से अच्छे खुशबुओं के मिलावट से तैयार होता था।याह्या का कहना है :मैंने पूछा यह क्या है तो मुहम्मद ने कहा :यह देखो चादर है जो मेरी पत्नी ने मुझ पर डाल दिया और मुझे खुशबू लगा दी, वास्तव में वे भी हम से उसी चीज़ की इच्छा रखती हैं जिसकी हम उनसे इच्छा रखते हैं।इसे इमाम कुरतुबी ने अपनी तफसीर “अल-जामिअ लि अहकामिल कुरआन” में उल्लेख किया है।

इसलिए याद रखें कि पत्नी भी आप से बनने संवरने की इच्छा रखती है जैसे आप इन बातों की इच्छा रखते हैं , तो हमको साफ़ सुथरा रहने और बनने संवरने का ढंग हमारे प्रिय पैगंबर और उनकी पवित्र पत्नियों से और उनके साथियों और उनके बाद के हमारे पूर्वजों से सीखना चाहिए।

अल्लाह के दूत -उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- का सुंदर स्वभाव

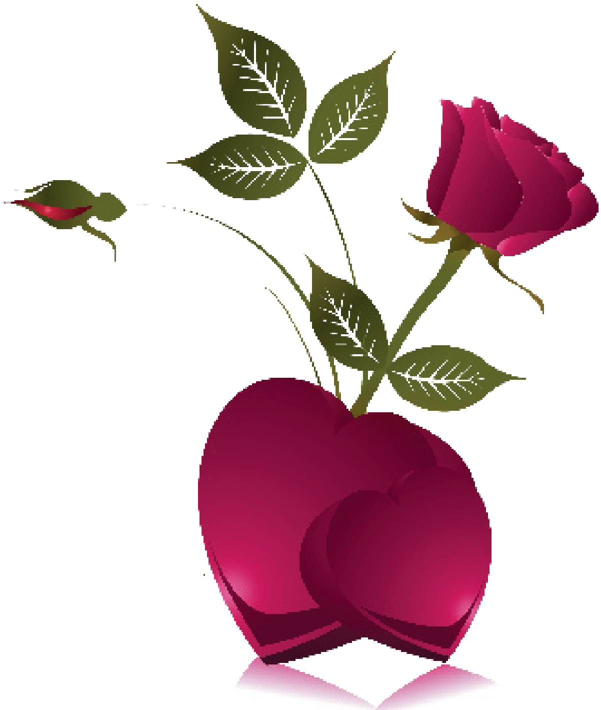

हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- की तरह का वैवाहिक स्वभाव किसी महिला ने कभी भी नहीं देखी और जैसा सुंदर स्वभाव एक पति में होना चाहिए वैसा उन में भर पूर तरीके से उपस्थित था , वास्तव में उनका स्वभाव, उनकी बात, उनके किरदार बिलकुल शुभ क़ुरआन का अनुवाद थे।

अपनी पवित्र पत्नियों के साथ उनकी नैतिकता यही रहती थी कि वह सदा उनके साथ अच्छा बर्ताव करते थे , सदा मुस्कुराहट से पेश आते थे , अपनी पवित्र पत्नियों के साथ हंसी मज़ाक़ और नरमी से पेश आते थे, दिल खोल कर उन पर ख़र्च करते थे , खुद भी हँसते और उनको भी हंसाते थे, वह तो हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-के साथ दौड़ का रेस भी लगाते थे।इस विषय में खुद हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- कहती हैं कि एक बार हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- मेरे साथ दौड़ का मुक़ाबला किए थे तो मैं जीत गई थी।थोड़े समय बीतने के बाद जब मैं ज़रा मोटी हो गई थी तो एक बार फिर मेरे साथ दौड़ का मुक़ाबला किए तो वह जीत गए।इस पर उन्होंने कहा :"यह उसका जवाब है" मतला यह पहली वाली जीत का बदला है।यह हदीस हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-से कथित है, और सही है,

अल्बानी ने इसे साही कहा है, देखिए 'ग़ायतुल मराम' पृष्ठ या संख्या: 377।

और हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- हर रात अपनी पत्नियों को उस घर में इकठ्ठा करते थे जहां रात में रहना होता था और कभी कभी उन सब के साथ रात का खाना खाते थे , और फिर सब अपने अपने घरों को वापस चली जाती थीं , फिर अपनी पवित्र पत्नियों में से उनके साथ आराम फरमाते थे जिनकी बारी होती थी।वह अपनी चादर उतार देते थे और तहबंद पहन कर अपनी पत्नी के साथ एक ही चादर में आराम फरमाते थे, और कभी कभी जब इशा की नमाज़ पढ़ लेते थे तो अपने घर में प्रवेश करते थे और अपने परिवार के साथ सोने से पहले कुछ देर कहानी और किस्सा और बातचीत करने में समय बिताते थे, उनके दुख दूर करते थे और इसके द्वारा उनका दुख का बोझ हल्का करते थे ।इसे हफीज इब्न कसीर –अल्लाह उनपर दया करे- ने उल्लेख किया है।

बल्कि हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने तो पतियों के अच्छे होने का तराजू इसे ही बताया कि अपनी पत्नियों के साथ अच्छा बर्ताव करें।उन्होंने इस विषय में फरमाया :" तुम्हारे बीच सब से अच्छा वह व्यक्ति है जो अपने परिवारके साथ अच्छा हैऔर मैं अपने परिवारके साथ तुम्हारे बीच सब से अच्छा हूँ। "

यह हदीस हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-से कथित है , लेकिन यह हदीस 'हसन' 'ग़रीब' 'सहीह' है , इसके कथावाचक इमाम तिरमिज़ी हैं , देखिए 'सुनन तिरमिज़ी' पेज नम्बरया संख्या: 3895।(हसन ग़रीब सहीह का मतलब यह है कि इस के बयान करनेवाले सारे लोग सच्चाई और विश्वास में मशहूर हैं लेकिन वे याद रखने में सही हदीस के कथावाचक के दर्जे पर नहीं हैं , और इसे कथित करनेवालों में से एक या कुछ लोग इस हदीस की किसी बात में अकेले रहे।)

ऐसे व्यक्ति के सब से अच्छा होने का कारण यह है कि अच्छे सवभाव से पेश आना कभी कभी कमज़ोर पड़ता है और अच्छे बर्ताव का मामला उस समय ठंडा पड़ जाता है जब आदमी यह महसूस करता है कि घरवालों और परिवार पर तो उसकी हुकूमत है , इसी तरह जब एक आदमी कुछ लोगों के साथ जो उनके मातेहत हैं ज़ियादा दिनों तक रहता है तो भी आदमी का बर्ताव बिगड़ जाता है और कमजोर पड़ता है और यदि एक आदमी यह सब बातों के बावजूद अपने बर्ताव को बचा कर चलता है और बिगड़ने से रोक लेता है, और ऐसे लोगों के साथ भी अच्छा रहता है जिनके साथ सदा रहना होता है, और जिनके साथ सदा का लेनदेन और नैतिक संबंध है उनके साथ भी अच्छा रहता है इसका मतला यही होता है कि वह सब से अच्छा आदमी है , और ऐसा आदमी तो

दुसरों के साथ भी अच्छा रहेगा।

और जब हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- अपने परिवार के लोगों के साथ सारे लोगों की तुलना में सबसे अच्छे थे तो मतलब साफ़ है कि अपने परिवार के साथ उनका बर्ताव भी निस्संदेह सब से अच्छा था और सब के लिए अपनाए जाने के योग्य नमूना था, बल्कि सच तो यह है कि नैतिक व्यवहार की पूर्णता के सारे अर्थ उन में भरपूर रूप से उपलब्ध थे , चाहे व्यवहारिक हो या लेनदेन की बात हो या प्यार और हंसी मज़ाक़ की बात हो, न्याय और दया का विषय हो या वफादारी की बात हो सब में वह नमूना थे , इसी तरह वैवाहिक जीवन में रातदिन होने वाली सारी बातों में वह यकता थे। जैसा कि उनकी जीवनी , बर्ताव और किरदार की पुस्तकों में उल्लेखित है। और यही बात उन सारी हदीसों में भी मिलती है जिन में हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- का उनकी पवित्र पत्नियों के साथ बर्ताव का वर्णन है।

(क) हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- के अपनी पवित्र पत्नियों के साथ प्यार के विषय में हज़रत अनस बिन मलिक-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- कहते हैं कि:

१- हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने कहा:"

इस दुनिया में से जो चीज़ मुझे प्रिय हैं वे यह हैं, महिलाएं, खुशबू और यह कि नमाज़ में मेरी आँख की ठंडक रखी गई। "

इसे अनस बिन मलिक ने कथित किया है, इसके कथावाचक विश्वसनीय हैं। इसे इमाम ज़हबी ने 'मीज़ानुल एतेदाल' में उल्लेख किया है, देखिए पेज नम्बर: 2 / 177।

२-अम्र बिन आस-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-ने हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- से यह कह कर पूछा:"लोगों में आपको सब से प्रिय कौन हैं? तो उन्होंने उत्तर दिया:आइश, तो मैंने पूछा : मर्दों में से कौन? तो उन्होंने उत्तर दिया: उनके पिता, इसके बाद मैंने पूछा:उनके बाद कौन? तो उन्होंने उत्तर दिया:उमर, इस तरह उन्होंने कई लोगों के नाम लिए, तो फिर मैं इस डर से चुप हो गया कि कहीं मुझे सब के बाद न रख दें।

इसे अबू उस्मान नह्दी ने कथित किया है, और यह हदीस सही है, इसे इमाम बुखारी ने उल्लेख किया है, देखिए बुखारी शरीफ पेज नंबर या संख्या: 4358।

(ख) और उनके अपने परिवार के साथ हंसी मज़ाक़ के विषय मेंहज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-कहती हैं:

१- मैं हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- के घर में लड़कियों के साथ खेलती थी, मेरी कुछ सहेलियां थीं जो मेरे साथ खेला करती थी और जब हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- प्रवेश करते थे तो वे सब उनसे भाग जाती थीं तो फिर वह उनको इकठ्ठा कर के मेरे पास पहुंचाते थे और फिर वे मेरे साथ खेलने लगती थीं। यह हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-से कथित है, और सही है, अल्बानी ने इसे उल्लेख किया, देखिए 'अलअदब अलमुफरद' पृष्ठ या संख्या: 283।

२-और हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-कहती हैं:एक बार हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-मुझे छिपा रहे थे और मैं हबशियों को देख रही थी, जब वे मस्जिद में अपना खेल दिखा रहे थे, तो हज़रत उमर-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- ने उन लोगों को झिड़क दिया इस पर हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- ने कहा: छोड़ दो, हे बनी अरफदह तुम लोगों को शांति का वचन है। मतलब तुमको सुरक्षा प्राप्त है।

यह हदीस हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-से कथित है, और सही है , इसे बुखारी ने उल्लेख किया है, देखिए बुखारी शरीफ पेज नम्बर या संख्या: 3529।

और एक दूसरे कथन में है , वह कहती हैं: "मैं देखी कि हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- मेरे कमरे के दरवाजे पर खड़े थे और हब्शी लोग अपने भालों से हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- की मस्जिद में खेल कर रहे थे, तो वह अपनी चादर में मुझ को छिपा रहे थे ताकि मैं उनका खेल देख सकूँ, वह मेरे लिए रुके रहते थे यहां तक कि मैं ही उठ जाती थी। इसलिए ऐ लोगो! तुम लोग भी नई नवेली और कम उम्र लड़की का ख्याल रखो, जिनको खेल कूद देखने का शौक़ होता है।"

यह हदीस हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-से कथित है, और सही है , इसे मुस्लिम ने उल्लेख किया है, देखिए मुस्लिम शरीफ पेज नम्बर या संख्या:892।

३- इसके इलावा अभी अभी हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-की वह हदीस

गुज़री है जिस में यह उल्लेख है कि हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- खुद उनका दिल बहलाने और दिल लगाने के लिए खेलते थेIवास्तव में वह बहुत दयालु कृपाशील और मेहरबान थे।

४- हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- के अच्छे बर्ताव और सुंदर स्वभाव उस शुभ हदीस से भी झलक रहे हैं जिस में हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-कहती हैं:"मैं पानी पीती थी और मैं माहवारी में होती थी, फिर मैं हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- को बरतन देती थी तो वह अपने पवित्र मुंह को उस जगह रख कर पीते थे जहां मैं मुंह रखती थी, और मैं हड्डी वाले गोश्त को दांत से नोचती थी और फिर हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-को देती थी तो वह अपने पवित्र मुंह को मेरे मुंह से काटे हुए गोश्त के टुकड़े पर रखते थेI यह हदीस हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-से कथित है, और सही है , इसे मुस्लिम ने उल्लेख किया है, देखिए मुस्लिम शरीफ पेज नम्बर या संख्या: 300I

और एक दूसरे कथन में हैहज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-कहती हैं कि "मैं हड्डी वाले गोश्त को दांत से नोचती थी और फिर हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-को देती थी जबकि मैं माहवारी में होती थी तो भी वह अपने पवित्र मुंह को मेरे मुंह से काटे हुए गोश्त के टुकड़े पर रखते थे, और मैं पियाली से पानी पीती थीऔर हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- को बरतन देती थी तो वह अपने पवित्र मुंह को उस जगह रख कर पीते थे जहां मैं मुंह रखती थी।" इसे अबू दाऊद ने उल्लेख किया।

हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- का अपनी पवित्र पत्नियों की ओर से दुखों पर धैर्य

हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-अपनी पत्नियों की ओर से दुख परधैर्य और उनकी ओर से होने वाली तकलीफों को सहने में सब से ऊँचा बुलंद मानव उदाहरण थे ।याद रहे कि अल्लाह की नजर में और लोगों के पास उनका बड़ा सम्मान , बड़ा दर्जा , ऊँचा रुतबा और महान पद होने के बावजूद, उनसे अधिक धैर्यवाला और पत्नियों को उनसे अधिक सहनेवाला किसी ने आज तक नहीं देखा, और अभी अभी हमने जो-हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-के धैर्य और सहनशीलता के विषय में उल्लेख किया है उस से आपके सामने यह बात स्पष्ट हो जाएगी, लेकिन फिर भी यहां हम इस विषय से संबंधित कुछ विशेष बातों का उल्लेख करते हैं।

१- हज़रत उमर बिन खत्ताब-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-ने कहा:"हम कुरैश के लोग महिलाओं को दबा कर रखते थे, लेकिन जब हम अनसार के पास आए तो पता चला कि यह लोग तो ऐसे हैं कि इनकी महिलाएं इनको दबा कर रखती हैं और फिर हमारी भी महिलाएं अनसार की महिलाओं से वही आदत सीखने लगीं, हज़रत उमर कहते हैं: एक बार मैं अपनी पत्नी पर चिल्लाया तो वह मुझे खरा जवाब दी, उसका जवाब देना मुझे बहुत कड़वा लगा, तो वह बोली मेरा जवाब आपको क्यों बुरा लग रहा है? अल्लाह की क़सम! अल्लाह के पैगंबर -उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- की पत्नियां भी तो उनको जवाब देती हैं, और कभी कभी तो उन में कोई उनको दिन भर और रात भर छोड़ी रहती हैं, यह सुन कर मैं बहुत गर्म हो गया और मैंने उसे कहा: उनमें से जो भी ऐसा करती है तो उसकी बर्बादी हो, फिर मैंने अपना कपड़ा ऊपर चढ़ाया और सीधा हफ्सा(मतलब अपनी बेटी जो हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-की पवित्र पत्नियों में शामिल थीं)के पास गया और उस से कहा:ऐ हफ्सा! क्या सचमुच तुम लोगों में से कोई हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-से लड़कर गुस्से में रात दिन गुज़ारती है?तो वह बोली: हाँ ।हज़रत उमर कहते हैं :इस पर मैंने कहा: तुम्हारी बर्बादी हो, और नाकामी का मुंह तुझे देखना पड़े, क्या तुम्हें डर नहीं है कि हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-के गुस्सा के कारण अल्लाह को भी गुस्सा आए और फिर तुम तबाह हो जाओ।" इसे बुखारी ने उल्लेख किया है।

देख लिया आपने कि हज़रत उमर-अल्लाह उनसे खुश रहे-अपनी पत्नी के उल्टा जवाब देने पर कितना गुस्सा हो गए और वह भी एक छोटी सी बात पर जबकि हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- तो अपनी पत्नियों के जवाब को पी

जाते थे, और क्रोध को थाम लेते थे, जबकि वे तो उनके साथ बातचीत भी बंद कर देती थी।जी हाँ वह एक सम्मानित दूत थे और महान नेता थे , और यह इसलिए कि वह बहुत धैर्यवाले और सहनशील थे।

२-इसके अलावा, ऐसी स्थितियों में भी वह उनके साथ नरमी से बात करते थे और ऐसा लगता था कि उनसे कोई ग़लती हुई ही नहीं, हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- कहती हैं कि हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- ने मुझ से कहा :"मुझे पता है जबतुम मुझ से ख़ुश रहती हो और जब तुम मुझ पर ग़ुस्से में रहती हो " उन्होंने पूछा कैसे? तो उन्होंने उत्तर दिया:जब तुम ख़ुश रहती हो तो यह कहती हो:"नहीं नहीं मुहम्मद के पालनहार की क़सम"और जब ग़ुस्से में रहती हो तो कहती हो: "नहीं नहीं इब्राहिम के पालनहार की क़सम"
उन्होंने कहा:"जी हाँअल्लाह की क़सम!हे अल्लाह के पैगंबर! मैं केवल आप का नाम नहीं लेती हूँ(जब गुस्से में रहती हैं)।इस हदीस कोबुखारी ने उल्लेख किया।

३-हज़रत अनस-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-से कथित है कि अल्लाह के पैगंबर -उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-अपनी पत्नियों में से किसी के यहां थे इतने उनकी पत्नियों में से कोई दूसरी पत्नी एक नौकर को एक थाली में भोजन दे कर भेजी तो वह पत्नी जिनके यहां हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- थे उस नौकर के हाथ पर मारी तो वह थाली गिर गई और टूट गई इस पर हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- खुद थाली के टुकड़ों को जमा किए और उसमें गिरे हुए खाने को जमा करने लगे, और बोले: तुम्हारी मां का भला हो, इसके बाद उस नौकर को रुकने बोले: और उस पत्नी के घर से ठीक थाली को लाकर उसे दिए जिनकी थाली टूटी थी और टूटी हुई थाली को उस पत्नी के घर पर रहने दिए जो थाली तोड़ी थी।इसे बुखारी ने उल्लेख किया।

ज़रा हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- के अपनी पत्नियों पर सब्र और धैर्य तो देखिए, कोई तो पूरे दिन भर उनको छोड़ देती थी, कोई तो उनके शुभ नाम को लेना छोड़ देती थी, कोई तो उनके सामने नौकर पर हाथ छोड़ देती थी , और हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-के लिए ज़रूरी और लाज़मी सम्मान को भी ठुकरा देती थी इस के बावजूद भी वह अनदेखी कर जाते थे और सह जाते थे और सब्र कर लेते थे बल्कि क्षमा कर देते थे, जबकि यदि वह चाहते तो उन्हें छोड़ देते या तलाक़ दे देते, और अल्लाह उनको उनसे बेहतर पत्नियां दे देता, मुसलमान, विश्वास वालियां अधिक से अधिक इबादत करने वालियां और रोज़े रखने

वालियां महिलाएं और कुंवारी भी अल्लाह उनको दे देता, जैसा कि खुद अल्लाह ने इस का उनको वचन दिया कि यदि वह उनको तलाक़ दे देंगे तो अल्लाह उनको ऐसी महिलाएं देगा, लेकिन वास्तव में वह बहुत दयालु , मेहरबान, और कृपाशील थे, माफ़ करते थे ,दुख को पी जाते थे, बल्कि सच तो यह है कि उन पर दुख जितना ज़ियादा डाला जाता था उतना ही उनका धैर्य रंग लाता था।

हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- की अपनी पत्नियों के प्रति वफादारी

पैगंबरहज़रतमुहम्मद-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- अपनी पत्नियों के प्रति बेहद वफादार थे, विशेष रूप से हज़रत खदीजा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- के साथ, उनकी तो हज़रत खदीजा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- के साथ इतनी ज़ियादा वफादारी थी कि हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- को उनपर डाह होने लगा, हालांकि हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- उनको कभी देखी भी नहीं थी और न हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-के घर में एक साथ शादी में रहीं थी (उनका तो बहुत पहले निधन हो चुका था) , हज़रत आइशा कहती हैं:

१- मुझे कभी हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- की किसी पत्नी पर उतना जलन नहीं हुआ जितना कि हज़रत खदीजा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- पर हुआ, क्योंकि हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- उनको बहुत याद करते थे और उनकी बहुत बड़ाई करते थे, और हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- को ईशवाणी आई थी कि उनको स्वर्ग में एक सोने से बने घर की खुशखबरी दे दें।यह हदीस हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-के द्वारा कथित की गई , और यह हदीस सही है, इसे इमाम बुखारी ने उल्लेख किया है, देखिए बुखारी शरीफ पेज नंबर या संख्या: ५२२९।

२- पैगंबर हज़रत मुहम्मद -उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- की अपनी पत्नियों के प्रति वफादारी उस शुभ आयत से भी स्पष्ट होती है जिस में उनको यह इख्तियार दिया गया था कि जिनको चाहें रखें और यदि छोड़ना चाहें तो छोड़ दें।अल्लाह सर्वशक्तिमान का फरमान है:

(يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُل لِّأَزْوَاجِكَ إِن كُنتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا فَتَعَالَيْنَ أُمَتِّعْكُنَّ وَأُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيلاً) (الأحزاب: 28)

(ऐ नबी! अपनी पलियों से कह दीजिए कि “यदि तुम सांसारिक जीवन और उसकी शोभा चाहती हो तो आओ , मैं तुम्हें कुछ दे-दिलाकर भली रीति से विदा कर दूँ।(अल अहज़ाब: 28)

हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-कहती हैं कि जब हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- को पत्नियों को रखने या छोड़ने के विषय में इख्तियार दिया

गया तो सब से पहले उन्होंने मुझ से शुरू किया और कहा: “मैं तुम से एक बात कहने जा रहा हूँ देखो तुम जल्दी न करना अपने माता पिता के साथ चर्चा कर लेना, और उन्हें पता था कि मेरे माता पिता तो उनसे जुदा होने का हुक्म देने वाले नहीं , आगे हज़रत आइशा कहती हैं : फिर उन्होंने उपर उल्लेखित आयत को पढ़ा , तो मैं बोली: इस में अपने माता पिता से मुझे पूछने की क्या ज़रूरत? मैं तो अल्लाह और उसके दूत को चाहती हूँ।

यह हदीस हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-के द्वारा कथित की गई , और यह हदीस सही है, इसे इमाम बुखारी ने उल्लेख किया है, देखिए बुखारी शरीफ पेज नंबर या संख्या: ४७८५।

यहां यह डर था और हो सकता था कि अपनी कमउम्री के कारण सांसारिक सुखों को पाने की इच्छा प्रकट कर दें , और दुनिया और आखिरत की बहुत सारी भलाइयों को खो बैठें , लेकिन वह अपनी भलाई का अपने माता पिता से भी अधिक ख्याल करने वाली निकलीं , इस लिए वह हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-को साफ़ साफ़ बोल दीं: क्या इस बारे में मैं अपने मातापिता से पूछने जाऊँगी ? मैं तो अल्लाह, उसके दूत और आखिरत को चाहती हूँ।

इसके बाद हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-अपनी पवित्र पत्नियों के घरों को जा जा कर यह बात बताने लगे और उनको कहने लगे: आइशा ऐसा ऐसा कही तो वे सब बोलीं: हम भी वही कहते हैं जो आइशा कहती हैं।हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- पहले ही हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- को बोल रखी थी कि आप अपनी पत्नियों को यह न बताएं कि मैं आपको चुनी हूँ , तो हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- ने फरमाया: अल्लाह सर्वशक्तिमान ने मुझे पहुंचानेवाला बना कर भेजा है न कि मनमानी करने वाला।

यह हादीस हज़रत अय्यूब से कथित है, और विश्वसनीय है, इसे अल्बानी ने उल्लेख किया है, देखिए ‘सहीह तिरमिज़ी’ हदीस नम्बर ३३१८।

वे सब के सब अल्लाह, उसके पैगंबर और आखिरत को चुनीं, इस से पता चलता है कि उनकी सारी पत्नियां ईशवाणी जिस घर में उतरता था उस घर के तौर तरीक़े और शिष्टाचार पर चलती थीं, इसलिए वे भी अपने अपने लिए वही चुनीं जो हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- चुन रखे थे कि थोड़ी मोड़ी और काम चलाव दुनिया बस है और फिर आखिरत असल है, वास्तव में वे सब के सब हज़रत

पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- की महान शिष्टाचार से प्रभावित थीं जिनके कमाल और ऊँचाई का क्या कहना !!

हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- का अपनी पत्नियों के बीच बराबरी करना

पैगंबरहज़रतमुहम्मद-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- अपनी पत्नियों के साथ बिल्कुल इनसाफ से चलते थे , और जैसा कि उल्लेख किया जा चुका है कि वह बहुत प्यार वाले , सहनशील, वफादार और माफ़ करने वाले थे, वास्तव में उनका इंसाफ उनकी जिम्मेदारी की भावना से उत्पन्न हो रहा था और क्योंकि अल्लाह सर्वशक्तिमान ने उन्हें इंसाफपसंदी और हक़ पर पैदा किया था और इन दोनों बातों के साथ उन्हें लोगों की तरफ भेजा।

१- हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- कहती हैं :" ऐ मेरे भांजे! अल्लाह के पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-बारी में या ठहरने में हमारे बीच एक दूसरे के साथ नाइंसाफी नहीं करते थे, और बहुत ही कम ऐसा होता था कि हम सब का चक्कर नहीं लगाते थे और बिना छूए के (बिनामैथुनकिए) प्रत्येक पत्नी के नज़दीक जाते थे और अंत में उस पत्नी के घर पर आते थे जिनकी बारी होती थी और फिर उनके यहाँ रात बिताते थे।सौदा बिनते ज़मआ कहती हैं कि जब उनकी उम्र हो गई और उनको डर लगा कि कहीं पैगंबरहज़रतमुहम्मद-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-उनसे अलग न हो जाएं तो उन्होंने हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-को कहा: ऐ अल्लाह के पैगंबर! मेरी बारी आइशा को देती हूँ, तो हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने इस बात को स्वीकार कर लिया।

वह कहती हैं कि इसी और इस तरह की समस्याओं के बारे में यह आयत उतरी:

(وإن امرأة خافت من بعلها نشوزا)

)यदि किसी स्त्री को अपने पति की ओर से दुर्व्यवहार या बेरुखी का भय

हो ।) यह हदीसहज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-से कथित है।

और यह हदीस विश्वसनीय है, इसे अबू-दावूद ने उल्लेख किया है । देखिए 'सुनन अबू-दावूद' पृष्ठ नम्बर या संख्या २१३५।

२-वह सदा इनसाफ और बराबरी के पाबंद रहते थे, और यात्रा के बावजूद भी अपनी पत्नियों के बीच इनसाफ में कोई प्रभाव नहीं पड़ता था और जिस तरह वह अपने घर पर रहते हुए इनसाफ करते थे उसी तरह यात्रा पर रहने की स्तिथि में भी इनसाफ

करते। हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- कहती हैं कि हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-जब यात्रा करने का इरादा करते थे तो अपनी पत्नियों के बीच चुनाव करते थे (या सिक्का उछालने की तरह का कोई काम करते थे) और जिनका नाम निकलता था उनको साथ लेते थे, और प्रत्येक पत्नी के लिए रात और दिन में भाग देते थे लेकिन सौदा बिनते ज़मआ ने अपने दिन और रात हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-की पत्नी हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-को दे दी थी, वास्तव में वह हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-की खुशी चाहती थी।

यह हदीस हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-के द्वारा कथित की गई , और यह हदीस सही है, इसे इमाम बुखारी ने उल्लेख किया है, देखिए बुखारी शरीफ पेज नंबर

या संख्या: २५९३।

मतलब जब वह बड़ी उम्र की हो गई थी और उनको मर्दों की इच्छा नहीं रही थी तो उन्होंने अपनी बारी हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- को दे दी थीं।

३-हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-के अपनी पत्नियों के साथ इनसाफ का एक उदाहरण यह भी है कि जब वह किसी गैर कुंवारी महिला से विवाह करते थे तो उनका दिल रखने के लिए उनके साथ तीन रातों के लिए रहा करते थे,

उसके बाद उनके लिए भी सारी पत्नियों की तरह ही बारी बाँध देते थे।

जैसा कि हज़रत उम्मे सलमा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-से कथित है उन्होंने कहा कि हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-उनके पास तीन दिन रहे थे और उनसे कहा था :यदि तुम चाहो तो तुम्हारे पास सात दिन रहूँ और फिर उनके साथ भी सात सात दिन रहूँगा, और अगर चाहो तो तुम्हारे पास तीन दिन रहूँ और चक्कर लगाऊं तो उन्होंने कहा तीन दिन रहिए।

यह हदीस हज़रत अबू-बक्र बिन अब्दुर-रहमान से कथित है , और सही है इसे इमाम बुखारी ने 'तारीख कबीर'में उल्लेख किया, देखिए पेज नंबर या संख्या:१/४७

४- हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-तो इतना ज़ियादा इनसाफ का ख्याल रखते थे कि अपने अंतिम दिनों के दौरान भी अपनी पत्नियों पर ज़ुल्म नहीं होने दिए , और उस समय भी वह अपनी पत्नियों में से प्रत्येक के यहाँ बारी के अनुसार जाते रहे। हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- कहती हैं :"जब हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-बहुत बीमार हो गए थे तो अपनी पत्नियों से मेरे घर में रहने की अनुमति मांगी तो उनकी पत्नियों ने अनुमति दे दी, इसके बाद वह दो आदमियों के बीच सहारा लेकर चले और उनके पैर ज़मीन पर घिसट रहे थे वह हज़रत अब्बास और एक किसी आदमी के बीच में चल रहे थे, उबैदुल्लाह-जो इस हादीस के कथावाचक हैं-ने कहा :मैंने इब्ने अब्बास से हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- के कथन का उल्लेख किया तो उन्होंने कहा क्या तुम जानते हो कि वह आदमी कौन हैं जिनका नाम हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- ने छोड़ दिया मैंने कहा :नहीं तो उन्होंने कहा :वह हज़रत अली बिन अबी तालिब थे।"

यह हदीस हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-के द्वारा कथित की गई , और यह हदीस सही है, इसे इमाम बुखारी ने उल्लेख किया है, देखिए बुखारी शरीफ पेज नंबर या संख्या: २५८८।

५- एक दूसरे कथन में उल्लेख है हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-अपने अंतिम दिनों में और जिस बीमारी में उनका निधन हुआ उस समय पूछते थे और कहते थे "कल मेरी बारी कहाँ है?" "कल मेरी बारी कहाँ है?" मतलब हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- की बारी कब है? तो उनकी पत्नियों ने उन्हें अनुमति दे दी कि जहां चाहें रहें तो वह हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- के यहां रहते थे यहां तक कि उन्हीं के यहां उनका निधन हुआ। हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न

रहे- कहती हैं :" तो उनका निधन मेरे यहां उस दिन हुआ जिस दिन मेरी बारी थी , अल्लाह सर्वशक्तिमान ने उन्हें उठा लिया जब उनका सिर मेरे गोद में था और उनके मुंह का पानी मेरे मुंह के पानी से मिला था फिर वह कहती हैं : अब्दुररहमान बिन अबू-बक्र आए उनके हाथ में एक मिस्वाक था जो मिस्वाक करने के लिए रखे थे तो हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने उनको देखा तो मैं उसे बोली ऐ अब्दुर्रहमान! यह मिस्वाक इन्हें दे दो तो उसने मुझे दिया तो मैं उसे चबाई और उसे दांतों से नरम की फिर उसे हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-को दी तो वह उससे मिस्वाक किए और वह मेरे सीने से टेका लिए हुए थे।"

यह हदीस हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-के द्वारा कथित की गई , और यह हदीस सही है, इसे इमाम बुखारी ने उल्लेख किया है, देखिए बुखारी शरीफ पेज नंबर या संख्या: ४४५०।

६-हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-अपनी पत्नियों के बीच जहां तक हो सकता था बहुत इनसाफ करते थे और इनसाफ का पूरा पूरा ख्याल रखने के बावजूद भी अल्लाह से माफ़ी मांगते थे अगर उनसे कुछ कमी रह जाती थी जो उनके बस से बाहर था और जो नहीं कर सकते थे तो भ अल्लाह से माफ़ी मांगते थे। इस विषय में हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- कहती हैं कि हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-अपनी पत्नियों के बीच इनसाफ करते थे और बारी रखते और फिर यह दुआ करते थे:" ऐ अल्लाह यह मैं इनसाफ करता हूँ जो मेरे बस में है और उस बात पर मुझे दोषी मत रख जो तेरे बस में तो है लेकिन मेरे बस में नहीं है।"

यह हदीस हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-के द्वारा कथित की गई , इस हदीस को हम्माद बिन ज़ैद ने अबू-अय्यूब से किलाबा से "मुरसल" रूप से कथित किया है।"मुरसल" ऐसी हदीस को कहते हैं जिनको किसी 'ताबई' सहाबी को छोड़ कर सीधा हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-से कथित कर दें।इसे इमाम बुखारी ने उल्लेख किया है, देखिए 'इलल कबीर' पेज नंबर या संख्या: १६५।

इसका मतलब यह है कि जिसका संबंध दिल की भावना से है वह तो मेरे बस में नहीं है , और यह बात अबू-दावूद ने कही है, और यह भी कहा गया है कि इसका मतलब दिल का झुकाव और प्यार है जैसा कि इमाम तिरमिज़ी ने उल्लेख किया इस का अर्थ यह है कि बाहरी बारी में तो वह पूरा पूरा ख्याल रखते थे क्योंकि यह बात उनके बस में थी लेकिन दिल तो अल्लाह सर्वशक्तिमान के हाथ में है और उनकी दिल की भावना तो हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- की तरफ ज़ियाद थी और यह तो उनके

बस और इरादे से बाहर थी।

इस के बावजूद भी वह अल्लाह सर्वशक्तिमान से दुआ करते थे कि जो बात उनके बस और क़ाबू में नहीं है उस पर पकड़ न करे और दिल की भावना में तो इनसाफ करने का आदमी को आदेश भी नहीं है, हाँ ख़र्च में और बारी में इनसाफ करने का आदेश है, लेकिन फिर भी हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-इस लिए दुआ करते थे कि मोमिन का दिल सदा अल्लाह से डर कर रहता है, जैसा कि अल्लाह सर्वशक्तिमान का फरमान है:

(والذين يؤتون ما آتوا وقلوبهم وجلة أنهم إلى ربهم راجعون) المؤمنون : 60 .

(और जो लोग देते हैं, जो कुछ देते हैं और हाल यह होता है कि दिल उनके काँप रहे होते हैं, इसलिए कि उन्हें अपने रब की ओर पलटना है।)

एक दूसरी हदीस में जो आया है उससे पता चलता है कि पत्नियों के बीच न्याय एक गंभीर बात है। हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने कहा है :" जिसकी दो पत्नियां हो और किसी एक की ओर ज़ियादा झुकाव रखता हो तो क़ियामत के दिन जब वह आएगा तो उसका एक पहलू झुका हुआ होगा।"

इस हदीस को अबू-हुरैरा ने कथित किया और यह हादीस ठीक है इसे इब्ने अदी ने उल्लेख किया है , देखिए 'अलकामिल फीद-दुअफाअ'पेज नंबर या संख्या: ८/४४६।

वास्तव में हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-के अपनी पत्नियों के साथ इनसाफ करने में वफादार विश्वासियों के लिए सबसे अच्छा उदाहरण है।मुसलमानों को चाहिए कि वे इसका ज्ञान प्राप्त करें और उस पर चलें क्योंकि अल्लाह सर्वशक्तिमान का फरमान है:

لقد كان لكم في رسول االله أسوة حسنة لمن كان يرجو االله واليوم الآخر وذكر االله كثيرا (الأحزاب: 21)

(निस्संदेह तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में एक उत्तम आदर्श है अथार्त उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और अंतिम दिन की आशा रखता हो और अल्लाह को अधिक याद करे।)(अल-अहज़ाब:२१)

सही बात यह है कि उनके किरदार उनकी बात और उनकी स्वीकृति उनके मानने वालों के लिए क़ानून है और उस में उनके लिए मार्गदर्शन है और सारे लोगों पर उसके अनुसार अमल करना ज़रूरी है यदि वह आदेश हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-के साथ विशेष न हो।

हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने पुरुषों को अपनी पत्नियों के साथ अच्छा बर्ताव करने की सलाह दी

हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने अपने शब्द और कर्म द्वारा अपने लोगों को अपनी अपनी पत्नियों के साथ भलाई करने और अच्छा बर्ताव रखने के बारे में निर्देशित किया और इस विषय में हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-से बहुत सारी हदीसें कथित हैं और सही हैं , उन हदीसों में से कुछ मैं यहाँ उल्लेख करता हूँ।

१-बुखारी और मुस्लिम ने हज़रत अबू-हुरैरा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- से उल्लेख किया है कि हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने कहा:»महिलाओं के साथ भलाई करने की सलाह दिया करो, क्योंकि वे एक पसली से बनाई गई हैं और पसलियों में सब से टेढ़ी तो ऊपर वाली पसली ही होती हैं तो यदि तुम उसे सीधी करने जाओगे तो तोड़ दोगे, और यदि छोड़ दोगे तो टेढ़ी रहेंगी, इसलिए महिलाओं के साथ भलाई की सलाह दिया करो ।»यह हदीस हज़रत अबू-हुरैरा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-के द्वारा कथित की गई , और यह हदीस सही है, इसे इमाम बुखारी ने उल्लेख किया है, देखिए बुखारी शरीफ पेज नंबर या संख्या: ३३३१।

और इमाम मुस्लिम के एक कथन में है: «महिला एक पसली से बनाई गई है वह कभी भी तुम्हारे लिए एक रास्ते पर सीधी नहीं होगी इसलिए यदि तुम उससे लाभ लोगे तो टेढ़े रहते पर ही लाभ ले लोगे और यदि तुम उसे सीधा करने जाओगे तो तुम तोड़ कर रख दोगे, उसके तोड़ने का मतलब यह है कि आप उसे तलाक़ दे देंगे।» यह हदीस हज़रत अबू-हुरैरा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-के द्वारा कथित की गई , और यह हदीस सही है, इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है, देखिए मुस्लिम शरीफ पेज नंबर या संख्या: ३३३१।

तो देख लिया आपने कि हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने किस तरह महिलाओं के साथ मेहरबानी करने की सलाह दी और साथ ही उनके स्वभाव को भी स्पष्ट शब्द में बयान किया ताकि उनकी सलाह को स्वीकार करने में कोई परेशानी न हो इसलिए कि जब यह पता चल गया कि टेढ़ापन उनके स्वभाव का एक भाग है तो मर्द को उस पर सब्र करना चाहिए और उसे बिल्कल सीधा करने की कोशिश नहीं करना चाहिए क्योंकि वह ज़रूर अपनी प्रकृति पर ही चलेगी और घूम फिर कर उसी पर वापिस होगी जिस सवभाव पर पैदा की गई है, यही कारण है कि एक कवि ने उस आदमी से आश्चर्य प्रकट किया जो महिला को बिल्कुल सीधा करना चाहते है ।उनका कहना है:

(औरत एक टेढ़ी पसली ही तो है आप उसे सीधा नहीं कर सकते , पसलियों को सीधा करने का मतलब ही उसका टूट जाना है।)

और एक दूसरे कवि ने स्वभाव को बदलने के विषय में कहा:

(जो भी किसी चीज के स्वभाव का उल्टा करना चाहता है तो वास्तव में वह पानी से आग लेने की कोशिश करता है।)

२- हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने इस सलाह को कई अवसरों पर दुहराया बल्कि जब जब भी उनको कोई अवसर हाथ आया तो उन्होंने इस बात की ओर ध्यान दिलाया, उन्होंने अपने आखरी हज यात्रा के अवसर पर अपने अंतिम संबोधन में धर्मोपदेश के बड़े भाग को इसी विषय के लिए ख़ास किया था।उस में हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने कहा था:» महिलाओं के साथ भलाई की सलाह दिया करो, वे तुम्हारे बंधन में हैं, इस के अलावा तुम कुछ कर भी नहीं सकते हो, लेकिन यदि वे स्पष्ट घृणा के काम में पड़ जाएं और यदि वे ऐसा कुछ करलें तो उनको बिस्तरों पर अलग रखो, (और यदि इस से भी कोई काम न बने तो)उनको बिल्कुल हलकी फुल्की मार मारो, और यदि वे बात मान लें तो फिर उनके खिलाफ रास्ता न ढूँढो, तुम्हारी अपनी पत्नियों पर अधिकार है और तुम्हारी पत्नियों के भी तुम पर अधिकार हैं , उन पर तुम्हारा अधिकार यह है कि वे तुम्हारे बिस्तरों पर किसी ऐसे को सोने की अनुमति न दें जिनको तुम नहीं चाहते हो, और न तुम्हारे घरों में ऐसे लोगों को अनुमति दें जिनको आप नहीं चाहते हो और उनके तुम पर यह अधिकार हैं कि तुम उनके साथ मेहरबानी करो उनके कपड़े में और उनके भोजन में।»

यह हदीस अम्र बिन अहवस से कथित है, और विश्वसनीय है , इसे अल्बानी ने उल्लेख किया है, देखिए ‹सहीह इब्न माजा›पेज नंबर या संख्या: १५१३।

हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने औरतों के साथ भलाई से संबंधित सलाह को बार बार इसलिए दुहराया क्योंकि वह महिलाओं के सवभाव को अच्छी तरह जानते थे जैसा कि अभी अभी हदीस शरीफ में उल्लेख किया गया, और इस प्रकृति को कुछ पुरुष सह नहीं पाते हैं और गुस्सा के समय खुद पर नियंत्रण खो बैठते हैं और महिला के टेढ़ेपन के कारण उनसे जुदा हो जाते हैं और पूरा घर परिवार तितरबितर हो जाता है और आपस में फूट पड़ जाता है।

इसलिए, हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने एक दूसरी हदीस में पतियों को निर्देशित किया जिस से परिवार के बीच भलाई का वातावरण बना रहता है।

३- कोई मोमिन पति मोमिन पत्नी से नफरत न रखे, क्योंकि अगर वह उसके किसी चरित्र को नापसंद करता है, तो वह उसके किसी दूसरे चरित्र को पसंद भी करता है।यह हदीस हज़रत अबू-हुरैरा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-के द्वारा कथित की गई , और यह हदीस सही है, इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है, देखिए मुस्लिम शरीफ पेज नंबर या संख्या: १४६९।

४- और हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने फ़रमाया:» मोमिनों में सबसे पक्का ईमान वाला वह है जो उनके बीच सब से अच्छा शिष्टाचार का मालिक है और अपने परिवार के लिए सबसे नरम है ।» यह हदीस हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-से कथित है, और यह हदीस विश्वसनीय है, इमाम तिरमिज़ी ने कहा:अबू-किलाबा के हज़रत आइशा से हादीस सुनने के विषय मुझे पता नहीं ।इसे मुनज़िरी ने उल्लेख किया है देखिए ‹तरगीब व तरहीब›पेज नंबर ३/९५।

५-और उन्होंने फ़रमाया:»तुम्हारे बीच सबसे अच्छा वह है जो अपने परिवार के लिए अच्छा है और मैं अपने परिवार के लिए आप सब की तुलना में सबसे अच्छा हूँ ।» यह हदीस हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-से कथित है, और यह हदीस विश्वसनीय है, इसे इब्ने जरीर तबरी ने उल्लेख किया देखिए ‹मुस्नद उमर›पेज नंबर या संख्या१/४०८। «

६-हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने कहा:» हर वह चीज़ जिस में अल्लाह सर्वशक्तिमान की याद शामिल न हो वह खेल या भूल है लेकिन चार बातें इस से अतिरिक्त हैं : एक आदमी का दो निशानों के बीच चलना (तीरंदाजी सीखना) और अपने घोड़े को सिधाना , और अपनी पत्नी के साथ दिल्लगी करना, और तैराकी सिखाना ।यह हदीस हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह अनसारी या जाबिर बिन उमैर से कथित है, इसके कथावाचक ठीक हैं , इसे मुनज़िरी ने उल्लेख किया है, देखिए ‹तरगीब व तरहीब›पेज नंबर या संख्या२/२४८।

इस के इलावा और भी बहुत सारी हदीसें हैं जो बहुत मशहूर हैं और जिनमें परिवारों और रिश्तेदारों के साथ अच्छा व्यवहार करने का आदेश दिया गया है।

हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-का अपनी पत्नियों को ज़रूरत

पढ़ने के समय अदब सिखाना

हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-अपने परिवार और अपनी सभी पत्नियों के साथ सुंदर बर्ताव करते ही थे , मेहरबानी, कृपा, नरमी और दया उनकी पहचान थी लेकिन वह सदा ऐसा ही नरम नहीं रहते थे क्योंकि हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-एक बहुत बड़े बुद्धिमान थे सब काम अवसर और समय और सही परिस्थितियोंके हिसाब से करते थे जब दया और नरमी का अवसर होता था तो उसी के अनुसार चलते थे और जब डांटने, सिखाने बात बंद करने का अवसर होता था और उसी में लाभ दिखता था तो उसी के अनुसार काम करते थे, जैसा कि एक कवि का कहना है: (उस सब्र और सहनशीलता में कोई भलाई नहीं है यदि उसके साथ थोड़ा गुस्सा न हो ताकि सहनशीलता की सफाई को मैली पड़ने से बचा सके)

और क्योंकि महिलाएं कुटिल स्वभाव और तेज़ भावनाओं पर पैदा की गई हैं इसलिए कभी कभी उनको डांटने, सधानेऔर उनको शिक्षित करने की भी ज़रूरत पड़ती है, इसलिए अल्लाह सर्वशक्तिमान ने यह जिम्मेदारी पुरुषों को सोंपी है , अल्लाह सर्वशक्तिमान का फरमान है:

الرِّجَالُ قَوَّامُونَ عَلَى النِّسَاءِ بِمَا فَضَّلَ اللَّهُ بَعْضَهُمْ عَلَى بَعْضٍ وَبِمَا أَنفَقُواْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ فَالصَّالِحَاتُ قَانِتَاتٌ حَافِظَاتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللَّهُ وَاللاَّتِي تَخَافُونَ نُشُوزَهُنَّ فَعِظُوهُنَّ وَاهْجُرُوهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوهُنَّ فَإِنْ أَطَعْنَكُمْ فَلاَ تَبْغُواْ عَلَيْهِنَّ سَبِيلاً إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيرًا (النساء:34).

(पति पत्नियों के संरक्षक और निगरां हैं, क्योंकि अल्लाह ने उनमें से कुछ को कुछ के मुक़ाबले में आगे रखा है, और इसलिए भी कि पतियों ने अपने माल ख़र्च किये हैं, तो नेक पत्नियां तो आज्ञापालन करनेवाली होती हैं और गुप्त बातों की रक्षा करती हैं क्योंकि अल्लाह ने उनकी रक्षा की है, और जो पत्नियां ऐसी हों जिनकी सरकशी का तुम्हें भय हो उन्हें समझाओ और बिस्तरों पर उन्हें अकेली छोड़ दो और(अति आवश्यक हो तो) उन्हें मारो भी, फिर यदि वे तुम्हारी बात मानने लगें तो उनके विरूद्ध कोई रास्ता न ढूंढों अल्लाह सबसे उच्च, सबसे बड़ा है।

(पवित्र कुरान, अन-निसा: 4:34)

वास्तव में हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने अपने परिवार के साथ इस तरह का तरीक़ा इसलिए अपनाया था ताकि मुसलमानों को शिक्षा मिले और

अपने परिवारों को सुधारने और शिक्षा देने में उनका अनुशासन कर सकें।

जब हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-की पत्नियों ने सामान्य सीमा से अधिक खर्च की मांग की इस क्षणभंगुर जीवन में सुख और प्रसन्न के आनंद की इच्छा उनके सामने रखीं -जबकि वह खुद दुनिया में काम चलाव मिल जाने के सिद्धांत पर चलते थे- इस पर हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने उनको छोड़ दिया और एक महीना तक उनके पास न जाने की क़सम खाली, यहाँ तक कि अल्लाह सर्वशक्तिमान पवित्र क़ुरआन की यह आयतें उतारी:

(يأيها النبي قل لأزواجك إن كنتن تردن الحياة الدنيا وزينتها فتعالين أمتعكن وأسرحكن سراحا جميلا * وإن كنتن تردن االله ورسوله والدار الآخرة فإن االله أعد للمحسنات منكن أجرا عظيما) الأحزاب : 28 - 29)

(ऐ नबी! अपनी पत्नियों से कह दो कि «यदि तुम सांसारिक जीवन और उसकी शोभा चाहती हो तो आओ, मैं तुम्हें कुछ दे-दिलाकर भली रीति से विदा कर दूँ।किन्तु यदि तुम अल्लाह और उसके रसूल और आखिरत के घर को चाहती हो तो निश्चय ही अल्लाह ने तुम में से उत्तमकार स्त्रियों के लिए बड़ा प्रतिदान रख छोड़ा है। (अल-अहज़ाब:२८-२९)

इस पर हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने उन्हें दो विकल्प के बीच इख्तियार दिया या तो उनके साथ रहें और सूखी रूखी पर काम चलाएं या फिर उनसे जुदा हो जाएं तो उन सब ने अल्लाह और उसके रसूल वाले विकल्प को चुन लिया जैसा कि हज़रत अनस , उम्मे सलमा और इब्ने अब्बास से कथित हदीसों में उल्लेख है जो बुखारी और मुस्लिम में है।

जी हाँ तो आपने देख लिया कि जब समस्या गंभीर होती थी तो हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-को कोई डर नहीं होता था और उनको डांटने और सुझाव देने में किसी निंदा करने वाले की निंदा से बिल्कुल नहीं डरते थे। जी हाँ यदि उनसे कोई धार्मिक गलती हो जाती या कोई ऐसी गलती हो जाती जिसको अन्देखी नहीं किया जा सकता तो वह ज़रूर सलाह देते थे , सुझाव पेश करते थे, डराते थे , गुस्सा करते थे समझाते थे लेकिन अवसर को देख कर और समय के अनुसार , जैसा कि उनके बारे में सभी को ज्ञान हैं और मशहूर है।

इस का साफ़ मतलब यही है कि हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-के शिष्टाचार बिल्कुलसंतुलित थे हर हर चीज़ को अपनी अपनी उचित जगह पर रखते थे।

हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-का अपनी पत्नियों के साथ प्यार मोहब्बत

अल्लाह के पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-की जीवनी में ध्यानी यह बात अच्छी तरह जानता है कि वह अपनी पत्नी का बहुत ख्याल रखते थे , और उनका अच्छी तरह देखभाल करते थे बल्कि सच तो यह है कि उन्हें अपने दिल में बैठाते थे।

इस विषय में उन्होंने बेहतरीन उदाहरण स्थापित किया, उन्हें दिलासा देने में सब से पहले रहते थे, उनका आँसू पोछते थे, उनकी भावनाओं का सम्मान करते थे, उनकी बात नहीं उठाते थे, उनकी शिकायत सुनते थे, उनका दुख हल्का करते थे, उनके साथ चलते फिरते थे ,उनके साथ दौड़ का मुकाबला भी करते थे , उनकी बेरुखी और लड़ाई झगड़े को भी सहते थे, उनकी पहचान का सम्मान करते थे यहां तक कि समस्याओं के समय में तो उनका और ज़ियादा ख्याल करते थे, केवल यही नहीं बल्कि उनके सामने अपने प्यार को स्पष्ट करते थे और उस प्यार से खुश होते थे , यह लीजिए यहाँ हमने आपके लिए कुछ मोतियाँ इकठ्ठा किए हैं जो आपके सामने बिखेरते हैं।

वह उनकी भावनाओं और उनके जज़्बात को पहचानते थे

हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- हज़रत आइशा –अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- को कहा करते थे:»मुझे पता है जब

तुम मुझ से खुश रहती हो और जब तुम मुझ पर गुस्से में रहती हो।

«उन्होंने पूछा कैसे? तो हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने उत्तर दियाजब तुम खुश रहती हो तो यह कहती हो:»नहीं नहीं मुहम्मद के पालनहार की क़सम»और जब गुस्से में रहती हो तो कहती हो «नहीं नहीं इब्राहिम के पालनहार की क़सम।» इस पर वह बोलीं:»जी हाँअल्लाह की क़सम!हे अल्लाह के पैगंबर मैं केवल आप का नाम नहीं लेती हूँ।»

यह हदीस हज़रत अबू-हुरैरा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-के द्वारा कथित की गई , और यह हदीस सही है, इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है, देखिए मुस्लिम शरीफ पेज नंबर या संख्या: २४३९।

उनकी ईर्ष्या और प्रेम को ध्यान में रखते थे

हज़रत उम्मे सलमा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- कहती हैं कि एक बार वह हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-के पास अपनी एक थाली में कुछ खाना लेकर आई तो हज़रत आइशा –अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-एक चादर ओढ़े हुए आगे बढ़ीं और उनके साथ उनका गुलाम ‹फिहर› साथ था और थाली को तोड़ दी तो हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने थाली के दोनों टुकड़ों को मिलाया और दो बार यह शब्द बोले»खाओ तुम्हारी मां को ईर्ष्याहुई» इसके बाद हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- ने हज़रत आइशा –अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- की थाली ली और उम्मे सलामा के पास भेज दिया, और उम्मे सलमा की थाली हज़रत आइशा को दे दिए।यह हदीस हज़रत उम्मे सलमा से कथित हुई और यह हदीस सही है , इसे अल्बानी ने उल्लेख किया है , देखिए ‹सहीह नसई› पेज या संख्या नंबर: 3966।

उनकी मानसिक और प्रकृति को समझ कर चलते थे

हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने कहा:»महिलाओं के साथ भलाई करने की सलाह दिया करो, क्योंकि वे एक पसली से बनाई गई हैं और पसलियों में सब से टेढ़ी तो ऊपर वाली पसली होती हैं, तो यदि तुम उसे सीधी करने जाओगे तो तोड़ कर रख दोगे, और यदि छोड़ दोगे तो टेढ़ी रहेंगी, इसलिए महिलाओं के साथ भलाई की सलाह दिया करो।यह हदीस हज़रत अबू-हुरैरा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-के द्वारा कथित की गई , और यह हदीस सही है, इसे इमाम बुखारी ने उल्लेख किया है, देखिए बुखारी शरीफ पेज नंबर या संख्या: ३३३१।

याद रहे कि इस हदीस में महिलाओं की बुराई नहीं की जा रही है जैसा कि साधारण लोग ख़याल कर सकते हैं बल्कि इस में मर्दों को समझाया जा रहा है और उनको ज्ञान दिया जा रहा है और इस में महिलाओं की चमत्कारिक प्रकृति को बयान किया जा रहा है और इस में यह बात भी सिखाई जा रही है कि महिलाओं को जाइज़ कामों की सीमा में रखते हुए उनके टेढ़े सवभाव पर छोड़ दिया जा सकता है।लेकिन यदि पाप करने या अल्लाह की ओर से फ़र्ज़ की हुई बातों में सुस्ती की बात है तो उस समय उनको सीधा किया जाना चाहिए।

वह उनके साथ समस्याओं के बारे में बात भी करते थे और उनसे सलाह भी लेते थे

हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- अपनी पवित्र पत्नियों से सबसे नाजुक बातों में भी सलाह लेते थे।

इस में वह सलाह भी शामिल है जो हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- ने ‹सुलह हुदैबिया› के अवसर पर उम्मे सलमा से ली थी ,हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने कुरैश के मूर्तिपूजकों के साथ एक समझौता लिखवाया था, और यह घटना ‹हुदैबिया› के साल ‹हुदैबिया› नामक स्थान पर घटी थी, उस समय हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- ने अपने साथियों से कहा: चलो उठो कुरबानी के जानवरों को यहीं ज़बह कर लो और सिर मुंडा लो , इस हादीस के कथावाचक कहते हैं :अल्लाह की क़सम तो उनमें से एक आदमी ने भी हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-के आदेश पर अमल नहीं किया, यहां तक कि हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- ने यह आदेश तीन बार दुहराई, और जब कोई नहीं सुना तो हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- उठे और उम्मे सलमा के पास आए और उनको यह बात बताए तो उम्मे सलमा ने कहा:ऐ अल्लाह के दूत! आप जाइए और किसी से भी कोई बात मत कीजिए पहले अपनी कुरबानी के जानवर को ज़बह कर लीजिए और नाई को बुला कर अपना सिर मुंडा लीजिए।इस पर हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- निकले और किसी से कोई बात नहीं किए और पहले अपना काम कर लिए जब लोग यह देखे तो वे भी उठे और अपनी अपनी कुरबानी को ज़बह किए और आपस में एक दूसरे के सिर को मुंडने लगे और उस समय ऐसा लग रहा था कि चिंता के कारण एक दूसरे को मार डालेंगे ।» यह हदीस उम्मे सलमा हिन्द बिनते अबू-ओमय्या से कथित है, यह हदीस ‹मुतवातिर›(यानी बहुत मशहूर है कि झूट नहीं हो सकती)इसे अब्ने जरीर तबरी ने उल्लेख किया है, देखिए ‹तफसीर तबरी› पेज या संख्या: 2/ 293

हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-अपना प्यार और और अपनी वफादारी का उनको विश्वास दिलाते थे

हज़रत आइशा से कथित उम्मे-ज़रअ वाली हदीस में है जिसे इमाम बुखारी ने उल्लेख किया है कि हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- ने हज़रत आइशा को कहा: «मैं तुम्हारे लिए ऐसे ही हूँ जैसे अबू-ज़रअ उम्मे-ज़रअ केलिए था ।» मतलब मैं प्यार और वफादारी में तुम्हारे लिएअबू-ज़रअकी तरह हूँ , इस पर हज़रत आइशा ने कहा: मेरे मां बाप आप पर निछावर, आप तो जैसा अबू-ज़रअ उम्मे-ज़रअ केलिए था उससे कहीं बेहतर हैं ।यह हदीस हज़रत आइशा से कथित है और सही है , इसे बुखारी ने उल्लेख किया है ।देखिए पेज या संख्या नमबर:5189।

उनके लिए अच्छा से अच्छा नाम चुना करते थे

हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- ने हज़रत आइशा को कहा:»ऐ आइश! यह जिब्रील हैं तुम को सलाम कह रहे हैं।तो हज़रत आइशा बोली: और उन पर भी सलाम हो और अल्लाह की दया और उसके आशीर्वाद हो, आप तो वह देखते हैं जो मैं नहीं देख सकती।» उनका मतलब था कि हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- जो देखते हैं वह हज़रत आइशा नहीं देख सकती क्योंकि हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-तो फरिश्तों को देखते थे।और हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-हज़रत आइशा को «या हुमैरा!» (ऐ गोरी) के शब्द से संबोधित करते थे, «हमरा» अरबी भाषा में गोरी को कहते हैं और ‹हमरा› को प्यार जताने के लिए कभी «हुमैरा» भी कहा जाता है।

यह हदीस हज़रत आइशा से कथित है और सही है , इसे इब्ने हजर अस्क़लानी ने उल्लेख किया है, देखिए ‹फतहुल बारी› पेज या संख्या: २/५१५।

उनके साथ खाते पीते थे

इस विषय में हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- कहती हैं:»मैं पानी पीती थी और मैं माहवारी में होती थी, फिर मैं हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- को बरतन देती थी तो वह अपने पवित्र मुंह को उस जगह रख कर पीते थे जहां मैं मुंह रखती थी, और मैं हड्डी वाले गोश्त को दांत से नोचती थी और फिर हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-को देती थी तो वह अपने पवित्र मुंह को मेरे मुंह से काटे हुए गोश्त के टुकड़े पर रखते थे।» यह हदीस हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- से कथित है, और सही है , इसे मुस्लिम ने उल्लेख किया है, देखिए मुस्लिम शरीफ पेज नम्बर या संख्या: 300.

उनकी परिस्थितियों पर उबते नहीं थे

बुखारी में ही यह भी उल्लेखित है कि हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-ने कहा:मैं अल्लाह के पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- के सिर में कंघी करती थी जब मैं माहवारी में होती थी।

इस हदीस में एक शब्द «उरज्जिलु» أرجل है जिसका अर्थ है: मैं उनके बालों को संवारती थी।

यह हदीस हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-के द्वारा कथित की गई , और यह हदीस सही है, इसे इमाम बुखारी ने उल्लेख किया है, देखिए बुखारी शरीफ पेज नंबर या संख्या: २९५।

उनके गोद में सिर रखते थे और उनका टेका लिया करते थे

हज़रत आइशा –अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- कहती हैं :»हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-मेरी गोद में टेका लेते थे जब मैं माहवारी में होती थी फिर वह कुरआन भी पढ़ते थे ।»

यह हदीस हज़रत आइशा से कथित हुई, और सही हदीस है, इसे बुखारी ने उल्लेख किया, देखिए बुखारी शारीफ पृष्ठ नम्बर या संख्या: 297।

उनके साथ चलना फिरना और उनके साथ इधर उधर जाते आते थे

हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-जब बाहर की यात्रा करते थे तो अपनी पत्नियों के बीच चुनाव रखते थे, एक बार हज़रत आइशा और हज़रत हफ्सा का नाम निकला तो दोनों उनके साथ निकले और जब रात होती थी तो हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-हज़रत आइशा के साथ चलते थे , उनके साथ बातचीत करते थे, तो हज़रत हस्फा हज़रत आइशा को बोलीं: क्या आज तुम मेरी सवारी पर बैठो गी और मैं तुम्हारी सवारी पर बैठूंगी? फिर मैं भी देखूंगी और तुम भी देखो गी क्या होता है? इस तरह हज़रत आइशा हज़रत हफ्सा की सवारी पर बैठ गईं और हज़रत हफ्सा हज़रत आइशा की सवारी पर बैठ गईं तो हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-हज़रत आइशा की सवारी के पास आए जबकि उस पर तो हज़रत हफ्सा बैठी थीं ,हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-सलाम किए और उनके साथ साथ चलने लगे यहां तक कि एक स्थान पर पड़ाव डाले, इतने में हज़रत आइशा उनको खोजे लेकिन वह दिखाई नहीं दिए तो उनको डाह हुआ , जब वे उतरे तो हज़रत आइशा ने (डाह के कारण) अपने पैर को ‹इज्खिर› (नामक घासों) में रखी (जहां सांप और बिच्छू रहते थे) और दुआ करने लगी:»हे पालनहार! मेरे लिए सांप या बिच्छू को भेज जो मुझे काटे, यह तो तेरे दूत हैं और इनको मैं कुछ कह भी नहीं सकती हूँ।यह हदीस हज़रत आइशा से कथित हुई, और सही हदीस है, इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया, देखिए मुस्लिम शारीफ पृष्ठ नम्बर या संख्या: 297।

घर के कामों में उनकी मदद करते थे

हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-से पूछा गया कि घर पर हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-किस तरह रहते थे ? तो उन्होंने उत्तर दिया : अपने परिवार के काम में लगे रहते थे और जब आज़ान सुनते थे तो(मस्जिद को) निकल पड़ते थे।

यह हदीस हज़रत आइशा से कथित हुई, और सही हदीस है, इसे इमाम बुखारी ने उल्लेख किया, देखिए बुखारी शारीफ पृष्ठ नम्बर या संख्या: 297।

उनका बोझ हल्का करने के लिए खुद अपने काम कर लेते थे

हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-से पूछा गया कि हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-अपने घर में क्या काम करते

थे ? तो उन्होंने उत्तर दिया : अपना कपड़ा सी लेते थे , और बकरी को दूह लेते थे , और अपना काम खुद कर लेते थे।

यह हदीस हज़रत आइशा से कथित हुई, और सही हदीस है, इसे अल्बानी ने उल्लेख किया, देखिए ‹सहीह अल-जामिअ› पृष्ठ नम्बर या संख्या:

4996। इसी तरह हज़रत आइशा कहती हैं कि हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- खुद अपना कपड़ा सीते थे , और अपने जूते को दुरुस्त कर लेते थे और सारे लोग जो काम अपने अपने घरों में करते हैं वे सब किया करते थे।यह हदीस हज़रत आइशा से कथित हुई, और सही हदीस है, इसे अल्बानी ने उल्लेख किया, देखिए ‹सहीह अल-जामिअ› पृष्ठ नम्बर या संख्या:४९३७।

उनकी खुशी के लिए खुद ही बहुत कुछ सह लेते थे

हज़रत आइशा कहती हैं कि हज़रत अबू-बक्र-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- एक बार उनके (हज़रत आइशा) पास आए और उस समय उनके पास दो लड़कियां दफ (ढोलक) बजा रही थी और गा रही थी औरहज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- अपने परिधान को ओढ़े हुए थे।

और एक कथन में है अपने कपड़े में लिपटे हुए थे तो अपने चेहरे को खोले और बोले

इनको बजाने दो ऐ अबू-बक्र! ईद के दिन हैं , यह दिन ईदे कुरबानी के थे और उस समय हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-शुभ मदीना में थे ।यह हदीस हज़रत आइश से कथित हुई और यह हदीस सही है , इसे अल्बानी ने उल्लेख किया है , देखिए ‹सहीह नसई› पेज या संख्या नंबर: १५९६।

उनकी साहिलियों के पास उपहार भेजते थे और उनका ख्याल रखते थे

हज़रत आइशा –अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- कहती हैं :» मुझे हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-की किसी पत्नी पर डाह नहीं हुआ मगर केवल खादीजा पर जबकि मैं उनको देखी भी नहीं , हज़रत आइशा कहती हैं कि हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-जब बकरी ज़बह करते थे तो कहते थे इसे खादीजा की सहेलियों को दे आओ , हज़रत आइशा कहती हैं एक दिन मैंने उनको भड़का दिया और बोली क्या खदीजा खदीजा? तो हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने कहा:मुझे उनका प्यार मिला।और एक कथन में केवल बकरी ज़बह करने तक ही की कहानी उल्लेखित है उसके आगे की पूरी कहानी नहीं है।यह हदीस हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-के द्वारा कथित की गई , और यह हदीस सही है, इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है, देखिए मुस्लिम शरीफ पेज नंबर या संख्या: २४३५।

और एक कथन में केवल इतना ही उल्लेख है :» हज़रत आइशा कहती हैं कि हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-जब बकरी ज़बह करते थे तो कहते थे इसे खादीजा की सहेलियों को दे आओ ।» यह हदीस हज़रत आइशा से कथित हुई और यह हदीस सही है , इसे अल्बानी ने उल्लेख किया है , देखिए मुस्लिम शरीफ पेज या संख्या नंबर: ४७२२।

उनकी तारीफ करते थे और उनका शुक्रिया अदा करते थे

हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने कहा: सारी महिलाओं पर आइशा की प्रतिष्ठा ऐसी ही है जैसे ‹सरीद›(एक प्रकार का बहुत मज़ेदार खाना) की प्रतिष्ठा सारे खानों पर है।यह हदीस हज़रत अनस-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-के द्वारा कथित की गई , और यह हदीस सही है, इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है, देखिए मुस्लिम शरीफ पेज नंबर या संख्या: २४४६।

वह उनकी खुशी पर खुश होते थे

हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- कहती हैं :मेरी सहेलियां मेरे पास आतीं थी

और जब हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- प्रवेश करते थे तो वे सब उनसे भाग जाती थीं तो फिर वह उनको इकठ्ठा कर के मेरे पास लाते थे।और जरीर के द्वारा कथित एक हदीस में है :मैं गुड़ियों के साथ उनके घर में खेलती थी , मतलब वह गुड़ियाँ उनके खिलौने थे।यह हदीस हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-के द्वारा कथित की गई , और यह हदीस सही है, इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है, देखिए मुस्लिम शरीफ पेज नंबर या संख्या: २४४०।

वह उनकी खुशी और उनके खेलने से खुश होते थे

हज़रतआइशा-अल्लाहउनसेप्रसन्नरहे-कहतीहैं: एकबारहज़रतपैगंबर-उनपरईश्वरकीकृपाऔरसलामहो-एकलड़ाईसेवापिसआएऔरमेरीकोठरी परएकपर्दापड़ा रहताथाऔरहवाचलनेसेमेरापर्दाहटगयाऔरमेरीगुड़ियाँ उनको दिखगईतोउन्होंनेकहा: यहक्याहैं? तोमैंबोली:यहमेरीगुड़ियाँहैं, तोउन्होंनेपूछाउनकेबीचमेंक्याहै? तोहज़रतआइशाबोलीं:यहएकघोड़ाहै, फिरवहपूछे उसघोड़ेपरक्याहै?तोहज़रतआइशाबोलीं: यहघोड़ेकेदोपंखहैं, हज़रतआइशाआगेबोलीं :क्याआपनेनहींसुनाकिसुलैमानबिनदावूदकेपासपंखवालेघोड़ेथे?इसपरहज़रतपैगंबर-उनपरईश्वरकीकृपाऔरसलामहो-इतनामुस्कुराएकिउनकेदांतनज़रआगए।यह हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-से कथित है, और सही है, अल्बानी ने इसे साही कहा है, देखिए ‹ग़ायतुल मराम› पृष्ठ या संख्या: १२९।

वह अपने प्यार को ज़ाहिर करते थे और उस से खुश होते थे

हज़रत आइशा –अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- कहती हैं : मुझे हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-की किसी पत्नी पर डाह नहीं हुआ मगर केवल खादीजा पर जबकि मैं उनको देखी भी नहीं थी , हज़रत आइशा कहती हैं कि हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-जब बकरी ज़बह करते थे तो कहते थे इसे खादीजा की सहेलियों को दे आओ , हज़रत आइशा कहती हैं एक दिन मैंने उनको भड़का दिया और बोली क्या खदीजा खदीजा? तो हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने कहा:मुझे उनका प्यार मिला।और एक कथन में केवल बकरी ज़बह करने तक ही की कहानी उल्लेखित है उसके आगे की पूरी कहानी नहीं नहीं है।यह हदीस हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-के द्वारा कथित की गई , और यह हदीस सही है, इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है, देखिए मुस्लिम शरीफ पेज नंबर या संख्या: २४३५।

वह उनके अच्छे सवभाव को ही नज़र में रखते थे

हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने कहा है:कोई मोमिन पति मोमिन पत्नी से नफरत न रखे, क्योंकि अगर वह उसके किसी चरित्र को नापसंद करता है, तो वह उसके किसी दूसरे चरित्र को पसंद भी करता है।यह हदीस हज़रत अबू-हुरैरा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-के द्वारा कथित की गई , और यह हदीस सही है, इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है, देखिए मुस्लिम शरीफ पेज नंबर या संख्या: १४६९।

उनके राज़ों को बाहर नहीं करते थे

हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने कहा है:अल्लाह के पास क़ियामत के दिन सब से बुरा आदमी वह है जो अपनी पत्नी से मिलता है और उसकी पत्नी उस से मिलती है फिर उसके रहस्य को खोल देता है।यह हदीस हज़रत अबू-सईद खुदरी -अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-के द्वारा कथित की गई , और यह हदीस सही है, इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है, देखिए मुस्लिम शरीफ पेज नंबर या संख्या: १४३७।

न उनको मारते थे और न उनको डांटते थे

हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे ख़ुश रहे- ने कहा: कि अल्लाह के पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने कभी अपने लिए इन्तेक़ाम या बदला नहीं लिया और कभी किसी को अपने हाथ से नहीं मारा, न किसी महिला को और न किसी नौकर को सिवाय इसके कि जब अल्लाह के रास्ते में लड़ते थे, इसी तरह यदि उनको कुछ नुक़सान पहुंचाया जाता था तब भी वह उस व्यक्ति से कभी भी बदला नहीं लेते थे। हाँ जब परमेश्वर के पवित्र कर्तव्य का उल्लंघन किया जाता था तब अल्लाह केलिए वह सज़ा देते थे।यह हदीस हज़रत अबू-हुरैरा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-के द्वारा कथित की गई , और यह हदीस सही है, इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है, देखिए मुस्लिम शरीफ पेज नंबर या संख्या: २३२८।

उनको दिलासा देते थे और उनके आँसू पोंछते थे

हज़रत सफिय्या-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-के साथ एक यात्रा पर थी , और उस दिन उन्हीं की बारी थी, चलने में वह

पीछे रह गईं तो जब हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-उनसे मिले तो वह रो रही थीं और कहने लगी :आपने मुझे बिल्कुल सुस्त ऊंट पर बैठा दिया तो हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-अपने दोनों हाथों से उनके आंसू पोछने लगे और दिलासा देने लगे।इसे नसई ने उल्लेख किया।

उनके मुंह में लुकमा रखते थे

हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने कहा:»निस्संदेह यदि तुम कुछ ख़र्च करते हो और उसके द्वारा अल्लाह की खुशी चाहते हो तो तुम्हारा दर्जा बढ़ता है और तुम्हें बुलंदी मिलती है, यहां तक कि जो लुकमा तुम अपनी पत्नी के मुंह में रखते हो।यह हदीस सही है इसे इब्ने तैमियाने उल्लेख किया है , देखिए ‹मजमूआ फतावा› पृष्ठ नंबर या संख्या: 10/31

हज़रत मुआविया ने कहा:मैंने पूछा ऐ अल्लाह के पैगंबर! हमारी पत्नी का हम पर क्या अधिकार है? तो उन्होंने कहा:»जब तुम खाते हो तो उसे भी खिलाओ , और जब तुम पहनते हो तो उसे भी पहनाओ, और(यदि मारने की ज़रूरत पड़े)तो चेहरे पर मत मारो, और बुरा भला मत कहो, और उन्हें मत त्यागो मगर घर ही की सीमा में। इसे मुआविया बिन हैदा कुशैरी ने कथित किया है और यह हदीस सही है , इसे इब्ने दकीक़ अल-ईद ने उल्लेख किया, देखिए ‹अल-इल्माम› पृष्ठ नंबर या संख्या: 2/ 655

उन पर विश्वास करते थे और उन्हें धोखा नहीं देते थे

हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने गलती पकड़ने या धोका के खोज के लिए अचानक अपने परिवार के पास टपक पड़ने से मना किया है, एक दूसरे कथन में केवल अचानक टपक पड़ने से मना करने का उल्लेख है, गलती पकड़ने या धोका के खोज का उल्लेख नहीं है। यह हदीस हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-के द्वारा कथित की गई , और यह हदीस सही है, इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है, देखिए मुस्लिम शरीफ पेज नंबर या संख्या: १४६९।

उनकी स्तिथि की खबर लेते थे और उनके बारे में पूछ गछ करते थे

हज़रत अनस –अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- कहते हैं: हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-रात और दिन में एक घंटा के लिए अपनी पत्नियों के पास चक्कर लगाते थे और वे ग्यारह महिलाएं थीं , इस हदीस के कथावाचक ने कहा:मैंने हज़रत अनस से पूछा क्या उनके पास इतना बल था? तो उन्होंने कहा: हमें यह कहा जाता था कि उन्हें तीस मर्दों का बल दिया गया था। यह हदीस हज़रत अनस बिन मालिक-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-के द्वारा कथित की गई , और यह हदीस सही है, इसे इमाम बुखारी ने उल्लेख किया है, देखिए बुखारी शरीफ पेज नंबर या संख्या: २६८।

माहवारी के दौरान उनका ख्याल रखते थे

अल्लाह के पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-अपनी पत्नियों के साथ कपड़े के ऊपर से संभोग करते थे जब वे माहवारी में होती थीं। यह हदीस हज़रत मैमूना बिनते हारिस-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-के द्वारा कथित की गई , और यह हदीस सही है, इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है, देखिए मुस्लिम शरीफ पेज नंबर या संख्या:

२९४।

उन्हें यात्रा में साथ रखते थे

हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-कहती हैं : हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-जब कहीं बाहर निकलना चाहते थे तो अपनी पत्नियों के बीच चुनाव रखते थे , जिनका नाम निकलता था उनको साथ लेते थे , एक बार वह एक लड़ाई में जाने का इरादा किए तो उस में मेरा नाम निकला , तो मैं हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-के साथ निकली और यह पर्दा का फरमान उतरने के बाद की बात है। यह हदीस हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-के द्वारा कथित की गई , और यह हदीस सही है, इसे इमाम बुखारी ने उल्लेख किया है, देखिए बुखारी शरीफ पेज नंबर या संख्या: २८७९।

उनके साथ दौड़ का मुक़ाबला रखते थे और उनके साथ खेलते थे

हज़रत आइशा –अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-कहती हैं : मैं एक यात्रा पर हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-के साथ थी और मैं अभी कम उम्र लड़की थी , हलकी फुल्की थी शारीर पर ज़ियादा गोश्त नहीं था , तो उन्होंने अपने साथियों को आगे निकलने के लिए कहा, तो वे आगे निकल गए फिर उन्होंने मुझ से कहा:आओ मैं तुम्हारे साथ दौड़ का मुक़ाबला करूँ , तो मैं दौड़ में उनसे आगे हो गई , एक बार फिर बाद में मैं उनके साथ एक यात्रा पर निकली तो उन्होंने अपने साथियों को आगे निकलने के लिए कहा , और फिर बोले :आओ मैं तुम्हारे साथ दौड़ का मुक़ाबला करूँ , और मैं तो पहले वाले दौड़ के मुक़ाबले को भूल चुकी थी , और अब मैं भारी भरकम हो चुकी थी और शरीर पर गोश्त चढ़ गया था तो मैं बोली : ऐ अल्लाह के दूत!मैं आपके साथ कहाँ दौड़ सकूंगी और अब मेरी यह स्तिथि है तो उन्होंने कहा:नहीं करना होगा, तो मैं दौड़ी लेकिन वह मुझ से आगे निकल गए और हँसने लगे, और बोले :यह उस जीत का जवाब है।यह हदीस हज़रत उम्मे सलमा से कथित हुई और यह हदीस सही है , इसे अल्बानी ने उल्लेख किया है , देखिए ‹आदाब अल-जिफाफ› पेज या संख्या नंबर: २०४।

उन्हें अच्छे अच्छे नामों से संबोधित किया करते थे

कथित है कि हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-को बोलीं : हे अल्लाह के पैगंबर!आपकी सारी महिलाओं के

लिए उपनाम हैं लेकिन मेरा कोई उपनाम नहीं है(यहां उपनाम का मतलब यह है कि मां बाप अपने बच्चों से संबंधित कोई नाम रख लेते हैं जैसे ‹अब्दुर्रहमान की मां या अबदुल्ला के पिता आदि) तो हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने उनसे कहा:तुम अब्दुल्ला से संबंधित उपनाम रख लो मतलब अबदुल्ला बिन ज़ुबैर से संबंधित ‹अबदुल्ला की मां› तुम्हारा उपनाम है, इसलिए उनको «उम्मे अब्दुल्लाह» मतलब अब्दुल्लाह की मां कहा जाता था जबकि उनके निधन होने तक उनको कोई संतान नहीं हुई थी।

यह हदीस हज़रत उरवा बिन ज़ुबैर से कथित हुई और यह हदीस सही है , इसे अल्बानी ने उल्लेख किया है , देखिए ‹अल-सिलसिला अल-सहीहा› पेज या संख्या नंबर: १/२55

उनकी खुशी और सुख में साझा करते थे

हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-कहती हैं: «अल्लाह की क़सम मैं देखी कि हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- मेरे कमरे के दरवाजे पर खड़े थे और हब्शी लोग अपने भालों से हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- की मस्जिद में खेल कर रहे थे, तो वह अपनी चादर में मुझ को छिपा रहे थे ताकि मैं उनका खेल देख सकूँ, वह मेरे लिए रुके रहते थे यहां तक कि मैं ही उठ जाती थी। इसलिए ऐ लोगो!आप लोग भी नई नवेली और कम उम्र लड़की का ख्याल रखो, जिनको खेल कूद देखने का शौक़ होता है।» यह हदीस हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-से कथित है, और सही है , इसे मुस्लिम ने उल्लेख किया है, देखिए मुस्लिम शरीफ पेज नम्बर या संख्या:892।और यह भी हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-के द्वारा कथित है, वहकहती हैं:एक दिन हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- मेरे कमरे के दरवाज़े पर ठहरे और हब्शी लोग मस्जिद में अपना खेल दिखा रहे थे, तो हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- अपनी चादर में मुझ को छिपा रहे थेऔर मैं उनका खेल देख रही थी।यह हदीस हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-से कथित है, और सही है , इसे बुखारी ने उल्लेख किया है, देखिए बुखारी शरीफ पेज नम्बर या संख्या: ४५४।

वह अपने घर में सुख और खुशी का वातावरण बनाए रखते थे

हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-कहती हैं: एक बार «सौदा» हमारे पास मिलने के लिए आईं तो हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- मेरे और उनके बीच बैठे उनका एक पैर मेरी गोद में था और दूसरा उनकी गोद में था, मैं सौदा

के लिए ‹खजबरा›(एक प्रकार का खाना) बनाई और उनको खाने के लिए बोली लेकिन वह खाने से इनकार कर दी तो मैं उनको बोली खाओगी या फिर तुम्हारे चेहरे पर लेप दूँ इस तरह मैं अपना हाथ उस खाने में रखी और उनके चेहरे को लेप दी इस पर हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- मुस्कुराए उसके बाद अपना पैर उनके लिए रखे रहे और सौदा को बोले उसके चेहरे को भी लेपो तो वह मेरे चेहरे को लेप दी इस पर भी हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- मुस्कुराए, इतने में हज़रत उमर वहां से गुज़रे तो उन्होंने उनको आवाज़ दे कर कहा: ऐ अब्दुल्लाह! ऐ अब्दुल्लाह! और हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- को लगा कि उमर अंदर आएंगे इस पर हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- दोनों को अपना अपना चेहरा धो लेने के लिए बोले, हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- कहती हैं इसलिए मैं भी उनसे डर कर रहती थी क्योंकिहज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने उनको सम्मान दिया था।यह हदीस हज़रत आइशा से कथित हुई और यह हदीस सही है , इसे अल्बानी ने उल्लेख किया है , देखिए ‹अल-सिलसिला अल-सहीहा› पेज या संख्या नंबर: ७/ ३६३।

वह अपनी पत्नियों के रिश्तेदारों को चाहते थे और उनका सम्मान करते थे

हज़रत अबू-उस्मान नह्दी से कथित है कि हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपाऔर सलाम हो-ने अम्र बिन आस को ‹ज़ाति सलासिल› नामक जंग के फौज के साथ रवाना किया था अम्र बिन आस कहते हैं कि:मैं उनके पास आया और पूछा:आप के पास लोगों मैं सब से अधिक प्रीय कौन हैं? तो उन्होंने कहा: «आइशा» (हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपाऔर सलाम हो-की पवित्र पत्नी)अम्रनेकहा: पुरुष के बारे मैं पूछ रहा हूँ, तो उन्होंने कहा: उनकेपिता।अम्रने कहा: फिरकौन ? तो उन्होंने उत्तर दिया:उमर बिन ख़त्ताब।अम्र ने कहा:फिर कौन? तो हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपाऔर सलाम हो-लोगों के नाम गिनाने लगे और उल्लेख करना शुरू किएऔर लोगों का नाम लेते गए।फिर हज़रत अम्र नेकहा:मैं तो इस डर से चुप हो गया कि हो सकता है मुझे सबसे पीछे न करदें।यह हदीस हज़रत अबू-उस्मान नह्दी-से कथित है, और सही है , इसे बुखारी ने उल्लेख किया है, देखिए बुखारी शरीफ पेज नम्बर या संख्या: ४३५८।

हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे- कहती हैं :जब भी हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- कोई यात्रा करना चाहते थे तो अपनी पवित्र पत्नियों के बीच चिठ्ठी उठाते थे(या चुनाव करते थे) और जिनका नाम निकलता था उनहीं को साथ ले जाते थे।

जब हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- ने «बनू-मुस्तलिक़» अभियान पर निकल रहे थे तो अपनी पवित्र पत्नियों के बीच चिठ्ठी उठाए, इसमें हज़रत आइशा का नाम आया, इसलिए वह हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- के साथ निकलीं।

उस समय महिलाएं थोड़ा मोड़ा खाना खाती थीं ताकि ज़ियादा गोश्त न चढ़ जाए और भद्दी न हो जाएं, वह एक कजावा में बैठती थीं और उस कजावे को उठा कर ऊंट पर रखा जाता था और जब उतरना होता था तो उस कजावे को ऊंट पर से उतार दिया जाता था और फिर वह उससे बाहर निकलती थी और अपनी ज़रूरत पूरी करने के बाद फिर उसमे बैठ जाती थीं और फिर ऊंट पर रख दिया जाता था।जब हज़रत पैगंबर -उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- अपने अभियान से फुर्सत पाए तो पवित्र मदीना को वापस होने लगे, और जब मदीना के निकट हुए तो एक स्थान पर अपनी अपनी सवारी से उतर गए और रात का कुछ भाग वहीं बिताए।फिर वहाँ से निकलने का आदेश दिया।तो वहाँ से रवानगी केलिए लोग अपने अपने सामान इकट्ठा करने लगे, इस बीच हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे ख़ुश रहे-शौचालय केलिए निकलीं। उनके गले में एक हार था जो «ज़ोफार»(यह एक प्रकार का दाना होता था जिस में काले और सुफेद रंग मिले होते थे।)के मोतियों का बना हुआ था जब वह ज़रूरत पूरी करलीं तो वह हार उनके गले से सरक कर गिर गया और उनको पता भी नहीं चला।

जब वह वापस क़ाफिला के पास आईं और अपने कजावे में प्रवेश होना चाहीं तो देखी कि गले का हार नहीं है, और लोग रवाना होने लगे,

वह अपना हार खोजने केलिए जल्दी से शौचालय की जगह की ओर निकलीं , वहाँ जाकर अपने हार को खोजने लगीं, इसमें ज़रा देर होगई।

लोग आए और उनके कजावे को उठाकर ऊंट पर रख दिए, उनको यह लगा कि वह उसके अंदर बैठी हैं, और कजावे को ऊंट पर बांध दिए, और ऊंट को लेकर रवाना हो गए।

इस तरह क़ाफिला निकल पड़ा किन्तु हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे ख़ुश रहे-अपने हार के खोज में लगी रहीं और बहुत खोज-तलाश के बाद उनका हार तो मिल गया किन्तु जब वह क़ाफिला की जगह पर आईं तो क़ाफिला जा चुका था।

हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे ख़ुश रहे-कहती हैं: जब मैं वापस लोगों के उतरने की जगह पर आई तो वहाँ कोई नहीं था न कोई बोलनेवाला और न कोई सुनने वाला, लोग तो निकल चुके थे तो मैं वहीं आ गई जहाँ उतरी थी, शायद लोग मुझे खोजेंगे और मेरे पास वापस आएंगे।

और मैं अपने आप को अपनी चादर में लिपट ली।जब मैं अपनी जगह पर बैठी थी तो बैठे बैठे ही मेरी आँख लग गई और वहीं सो गई, अल्लाह की क़सम मैं लैटि ही थी कि सफ्वान बिन मुअत्तल मेरे पास से गुज़रा, और वह भी अपनी किसी ज़रूरत के कारण क़ाफिला से पीछे छूट गया था, इसलिए वह लोगों के साथ नहीं हो सका था।

उसे एक सोए हुए मानव का रूप देखाई दिया तो वह मेरे पास आया और देख कर मुझे पहचान लिया क्योंकि परदा का आदेश उतरने से पहले मुझे देखा था।जब उसने मुझे देखा तो «इन्ना लिल्लाहि व इन्ना एलैहि राजिऊन»(हम अल्लाह ही केलिए हैं और हम उसी की ओर लौटने वाले हैं) अरे यह तो अल्लाह के पैगंबर -उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- की पवित्र पत्नी हैं।

उसके इन शब्दों को सुनकर मैं जाग उठी, तो मैंने अपनी चादर से

अपने चेहरे को छिपा ली, अल्लाह की क़सम मैंने उसके मुँह से «इन्ना लिल्लाहि व इन्ना एलैहि राजिऊन»(हम अल्लाह ही केलिए हैं और हम उसी की ओर लौटने वाले हैं) के अलावा कुछ नहीं सुनी और न उसने मुझ से कोई शब्द कहा।उसने अपने ऊंट को बैठाया जब ऊंट अपने सामने के दोनों पैरों को मोड़ कर बैठ गया तो मैं ऊंट पर सवार हो गई और वह ऊंट के सिर को पकड़ कर चलने लगा वह क़ाफ़िला से मिलने केलिए तेज़ तेज़ चला, तो अल्लाह की क़सम न लोगों ने मुझे खोजा और न हम क़ाफिला से मिल सके यहाँ तक कि सुबह हो गई इसके बाद हम ने देखा कि वे अपनी सवारियों से उतर रहे हैं, वे अभी उतर ही रहे थे कि यह आदमी ऊंट को हांकते हुए उनको दिखाई देने लगे।इसी पर तुहमत लगाने वाले तुहमत लगाने लगे और ग़लत-सलत बोलने लगे।और पूरा क़ाफिला कांप गया।और अल्लाह की क़सम मुझे तो इसका कोई पता ही नहीं था।

हम मदीना को पहुँच गए और फिर मैं बुरी तरह बीमार हो गई ।और लोगों की कोई बात मुझे पहुंचती ही नहीं थी, किन्तु बात हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- और मेरे माता पिता को पहुँच गई थी और वे मुझ से इस विषय में तिनका भर भी कोई बात उल्लेख नहीं करते थे, हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- से वह दया और प्यार मुझे दिखाई नहीं दे रही थी जो पहले देखा करती थी।

जबकि आमतौर पर, जब भी मैं बीमार पड़ती थी तो वह मुझ पर बहुत दया करते थे और मेरा ख्याल रखते थे।

लेकिन इस बार उन्होंने ऐसा कुछ नहीं किया बल्कि, यदि वह मेरे यहाँ आते भी थे और मेरी माँ मेरे पास बीमारी में साथ देने केलिए रहती थीं तो वह केवल इतना कहते थे: कैसी हैं यह? इस से अधिक कुछ नहीं कहते थे ।यहाँ तक कि मेरे दिल में क्रोध भी हुआ, जब मैंने उनकी बेरुख़ी देखि तो मैंने कहा: हे अल्लाह के पैगंबर! क्या आप मुझे अपनी माँ के यहाँ जाने की अनुमति देंगे ताकि मेरी माँ मेरी देखरेख कर सकें? तो उन्होंने कहा: कोई रोक नहीं है।

इस तरह मैं अपनी माँ के यहाँ चली गई, और फिर जो भी हो रहा था उसके विषय में मुझे कुछ पता नहीं था, यहाँ तक कि २० (बीस) से भी अधिक रातें गुज़र गईं , और हम लोग अरब जाति से थे हमारे पास शौचालय घरों में नहीं होता था जैसा कि गैर-अरब जातियों के घरों में होते हैं , हमारे पास इस से घृणा करते थे और हम लोग शौचालय के लिए गांव से बहार जाते थे और महिलाएं रात में निकला करती थीं फिर मैं अपनी बीमारी से कुछ ठीक हुई, तो एक रात मैं शौचालय केलिए बाहर निकली और मेरे पिता की मौसी की बेटी «उम्मे-मिस्तह» मेरे साथ थी।

अल्लाह की क़सम वह मेरे साथ जब चल रही थी इतने में अपनी चादर में उलझ कर गिर पड़ी या बिल्कुल गिरने को ही थी, इतने में उसने कहा कि मिस्तह बर्बाद हो!

मैंने कहा:यह क्या बुरा श्राप तुम दे रही हो! एक ऐसे आदमी को बुराभला कह रही हो जो बद्र की लड़ाई में भाग लिया था ।उसने कहा: हाए ! उसकी कमबख्ती! क्या आप नहीं सुनी हो कि उसने क्या कहा है? हे अबू-बक्र की बेटी! क्या आपको ख़बर नहीं पहुंची है?मैं पूछी क्या बात है?

इसपर उसने मुझे तुहमत लगनेवाले लोगों की ओर से उड़ाई हुई बात के विषय में बताई ।तो मैंने कहा:अच्छा! क्या ऐसा हुआ है? तो वह बोली:अल्लाह की क़सम ऐसा हुआ है ।इतना सुनना था कि मैं शौचालय को भी न जा सकी और वापस हो गई, इसके बाद मैं और अधिक बीमार हो गई ।अल्लाह की क़सम मैं लगातार रोती-धोती रही यहाँ तक कि मुझे लगा कि रोते-रोते मेरा सीना फट जाए गा, मैंने अपनी माँ से कहा:अल्लाह आपको माफ करे! लोग मेरे विषय में इतना सब कुछ बोल रहे हैं और आपने मुझे भनक तक भी लगने नहीं दिया!तो उन्होंने उत्तर दिया: मेरी बेटी! इसकी चिंता मत करो ।अल्लाह की क़सम यदि एक बहुत ही सुंदर महिला किसी पति के पास हो और वह उसे बहुत चाहता हो और फिर उसकी कई पत्नियां भी हों तो वे ऐसा करतीं हैं और लोग भी इस प्रकार की बहुत सारी बातें बकते हैं ।

मैंने कहा: पवित्रता हो अल्लाह के लिए! क्या लोगों ने ऐसी बातें की हैं?

उस रात मैं सुबह तक रोती रही, मेरे आँसू थमते नहीं थे, और आँखों से नींद बिल्कुल उड़ गई थी, यूँही सुबह तक रोती रही।

जब बात अधिक लंबी हो गई तो हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-लोगों के बीच में ठेहरे और उनको संबोधित किए , सब से पहले अल्लाह की प्रशंसा किए और उसका शुक्रिया अदा किए और फिर कहा:लोगो! क्या बात है? कुछ लोग मुझे मेरी पत्नी के विषय में चोट पहुँचा रहे हैं! और उनके बारे में झूठ बोल रहे हैं ।अल्लाह की क़सम में अपने परिवार में भलाई ही भलाई पाता आरहा हूँ ।और फिर एक ऐसे आदमी के साथ आरोप लगा रहे हैं जो शरीफ हैं, अल्लाह की क़सम में उसमें भलाई को छोड़कर कुछ नहीं देखता हूँ।

और वह कभी मेरे किसी घर में प्रवेश नहीं किए किन्तु वह मेरे साथ

था ।वास्तव में इसका सबसे बड़ा सरगना अब्दुल्लाह बिन उबै था जो ‹खज़रज› जनजाति से था और उसी के साथ मिस्तह और हमना बिनते जहश भी थे , हमना इस में इसलिए आगे आगे थी कि उनकी बहन ज़ैनब बिनते जहश हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-की पत्नियों में शामिल थीं , और हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-की पत्नियों में से कोई भी मुझ से बराबरी नहीं करती थी लेकन वह करती थी , ज़ैनब को तो अल्लाह सर्वशक्तिमान ने उनकी ईमानदारी के कारण इस बात में पड़ने से बचा लिया था लेकिन हमना जो उनकी बहन थी इस बात में ख़ूब बढ़ चढ़ कर भाग ली क्योंकि वह अपनी बहन के कारण मुझ से जलती

थी जब हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने यह कहा तो «औस» जनजाति के नेता उसैद बिन हुदैर उठे और बोले:हे अल्लाह के पैगंबर! यदि वे «औस» के लोग हों तो हम उन्हें देख लेंगे आप को कुछ करने की ज़रूरत नहीं है।और यदि वे हमारे भाई»खज़रज» के लोग हों तो अल्लाह की क़सम हमें आदेश दें निस्संदेह उनकी गर्दनें उड़ाई जानी चाहिए।

जब «खज़रज»जनजाति के नेता सअद बिन उबादा ने उनकी बात को सुना तो वह उठ खड़े हुए, हालांकि वह एक धर्मी आदमी थे किन्तु उनको

अपनी जाति की ओर उत्साह हुआ, वह खड़े हुए और बोले :मैं क़सम खाता हूँ कि तुम झूठे हो! उनकी गर्दन नहीं मारी जाए गी, अल्लाह की क़सम तुम यह बात इसीलिए कह रहे हो कि तुम्हें पहले से जानकारी है कि वे»खज़रज» के लोग हैं यदि वे तुम्हारी जाति के लोग होते तो तुम कभी यह बात नहीं कहते।तो उसैद बिन हुज़ैर ने कहा:अल्लाह की क़सम तुम झूठे हो, अल्लाह की क़सम हम ज़रूर उसे मार डालेंगे! किन्तु तुम भी एक पाखंडी हो इसीलिए पाखंडियों की तरफदारी कर रहे हो।

इस पर लोग एक दूसरे के प्रति क्रोध प्रकट करने लगे, और लड़ने-भिड़ने केलिए तैयार होगए।हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-मंच पर से उतरे और अपने घर को चले गए फिर उन्होंने हज़रत अली और ओसामा बिन ज़ैद को बुलाया और उनके साथ सलाह किया।

ओसामा ने हज़रत आइशा की प्रशंसा और बड़ाई की और कहा: हे अल्लाह के पैगंबर! हम तो आपके परिवार के बारे में अच्छा को छोड़कर कुछ जानते ही नहीं हैं।यह सब कुछ सरासर झूठ और इल्ज़ाम है।और हज़रत अली ने कहा: हे अल्लाह के पैगंबर!महिला तो बहुत हैं, और आप उनके बदले में किसी और से भी शादी कर सकते हैं।आप उनकी नौकरानी से पूछ लीजिए वह सब कुछ सच सच बता देगी।

हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने «बरीरा» को बुलाया हज़रत अली उठे और उसको ख़ूब मारे और बोले हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-को सच सच बोलो तो «बरीरा» ने कहा: कभी नहीं! अल्लाह की क़सम मैं उन में भलाई को छोड़कर और कोई बात नहीं देखी , आइशा में मुझे इस बात को छोड़कर और कोई कमी नहीं दिखाई दी, कि वह एक कमउम्र युवती थी, और मैं आटा गूंध कर रखती थी और उनको देखने केलिए बोलती थी तो वह सो जाती थी और फिर बकरी आ कर उसे खा जाती थी।

हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे ख़ुश रहे-ने कहा: उस दिन मैं लगातार रोती रही, मेरे आंसू थमने को नहीं थे, और न मैं एक पल केलिए भी सो सकी।

फिर मैं अगली रात को भी रोती रही, मेरे आंसू थमते नहीं थे, और न एक पल केलिए भी मुझे नींद आती थी।मेरे माता पिता को लगा कि रो रो कर मेरा कलेजा फट जाए गा।

इसके बाद हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-तेज़ तेज़ चलकर हज़रत अबूबक्र के घर को आए उस समय उनके माता पिता उनके पास ही थे।और वहाँ अनसार की एक औरत भी थीं जो हज़रत आइशा के साथ रोती थी।इसके बाद हज़रत पैगंबर -उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-हज़रत आइशा के पास गए, देखे कि वह बिस्तर पर पड़ी हैं।जब वह रोती थी तो वह अनसारी महिला भी उनके साथ साथ रोती थी।अल्लाह के पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-बैठे और अल्लाह की प्रशंसा किए और उसका शुक्रिया अदा किया और उसके बाद कहा:हे आइशा मुझे ऐसी ऐसी बात की सूचना मिली है, और उन्होंने आरोप वाली पूरी कहानी कह कर उनको सुनाई और उनके विषय में जो बहुत ही गंभीर पाप में डूबने की अफवाह फैलाई गई थी वह उनके सामने रखे।

उन्होंने उनको कहा: यदि तुम निर्दोष हो तो अल्लाह सर्वशक्तिमान तुम को निर्दोष घोषित कर देगा, और यदि तुम से कुछ हो गया है तो अल्लाह से क्षमा मांग लो और पश्चाताप करलो।क्योंकि जब अल्लाह का कोई भक्तअपने पापों को मान लेता है, और पश्चाताप कर लेता है तो अल्लाह उसकी पश्चाताप को स्वीकार कर लेता है।

हज़रत आइशा ने कहा:जब अल्लाह के पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने अपनी बात समाप्त कर ली तो मेरा आँसू भी सूख गया था और मेरी आँखों में आंसू का एक बूंद भी नहीं बचा था।मैं अपने माता पिता का इंतजार किया कि वे अल्लाह के पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-का कुछ उत्तर देंग किन्तु उन दोनों ने भी कुछ नहीं कहा ,तो मैंने अपने पिता से कहा:कृपया अल्लाह के पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-की बातों का उत्तर दीजिए, तो उन्होंने कहा: मुझे तो कुछ समझ में ही नहीं आ रहा है कि अल्लाह के पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-को क्या कहूँ, इस के बाद मैंने अपनी माँ से कहा:कि कृपया अल्लाह के पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-की बातों का उत्तर दीजिए, तो उन्होंने भी यही कहा: मुझे तो कुछ समझ में ही नहीं आ रहा है कि अल्लाह के पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा

और सलाम हो-को क्या उत्तर दूँ।

अल्लाह की क़सम मेरी जानकारी के अनुसार किसी घर पर ऐसे कठिन दिन नहीं बीते होंगे जो अबूबक्र के घर पर बीते थे।

जब मुझे लगा कि वे दोनों एक शब्द भी नहीं कह सकेंगे तो मेंने आंसू बहाते हुए और रोते हुए कहा: कभी नहीं! अल्लाह की क़सम जो आप उल्लेख कर रहे हैं उससे तो मैं अल्लाह के पास हरगिज़ पश्चाताप नहीं करूंगी, अल्लाह की क़सम मैं जानती हूँ कि आप लोगों ने इस अफवाह को इतना सुना कि वह आप लोगों के दिलोदिमाग़ में बैठ गई, और सच भी समझ बैठे, और अब यदि मैं आपको यह कहूँ कि मैं निर्दोष हूँ तो आप लोग मानने वाले नहीं हो, और अल्लाह सर्वशक्तिमान जानता है कि मैं बेक़सूर हूँ।किन्तु यदि मैं स्वीकार कर लूँ तो आप लोग मुझ पर विश्वास कर लेंगे।हालांकि अल्लाह जानता है कि मैं बेक़सूर हूँ,अल्लाह की क़सम मेरे पास एक ही उदाहरण है जो मेरी और आप लोगों के बीच की स्तिथि को प्रस्तुत करता है, और वह है हज़रत यूसुफ के पिता-शांति हो उनपर-की बात जब उन्होंने कहा था: «अब धैर्य से काम लेना ही उत्तम है और जो बात बता रहे हो उसमें अल्लाह ही सहायक है।»

हज़रत आइशा ने कहा: फिर मैं पलट कर अपने बिस्तर पर लेट गई।

अल्लाह की क़सम मैं जानती थी कि मैं निर्दोष हूँ और अल्लाह भी मुझे निर्दोष घोषित करेगा किन्तु मुझे इस बात की बिल्कुल उम्मीद नहीं थी कि मेरे विषय में अल्लाह के द्वारा वाणी आएगी और पढ़ी जाए गी।मैं कहाँ इस योग्य हूँ कि अल्लाह मेरे विषय में एक वाणी उतारे और फिर क़ुरआन के रूप में पढ़ी जाए।किन्तु मुझे इतनी उम्मीद ज़रूर थी कि अल्लाह के पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-को कोई सपना दिख जाएगा जिसमें अल्लाह सर्वशक्तिमान मुझे निर्दोष घोषित करदे।

अल्लाह की क़सम हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-अपनी जगह से हटे भी नहीं थे।और न घर से कोई बाहर निकला था कि अल्लाह की ओर से उनपर वाणी उतरने लगी और वाणी की स्तिथि उन पर आई जैसा कि आमतौर पर वाणी के उतरने के समय होती थी।

और अल्लाह ने अपने ईशदूत पर क़ुरआन के शब्द उतारे।तो जब मैंने वाणी की स्तिथि देखी तो अल्लाह की क़सम मुझे कोई भय नहीं हुआ, और मैंने कोई परवाह नहीं की क्योंकि मैं जानती थी कि मैं निर्दोष हूँ और अल्लाह मेरे साथ अन्याय नहीं करेगा।

किन्तु मेरे माता पिता-उस अल्लाह की क़सम जिसके हाथ में आइशा की आत्मा है-मुझे लगा कि वाणी उतरने से पहले ही उन दोनों की जान निकल जाएगी इस डर से कि कहीं लोगों की अफवाह सच न निकल

जाए।

जब उनसे वाणी उतरने की स्तिथि समाप्त हुई तो वह हँसते हुए दिखाई दिए और अपने माथे से पसीना पोछ रहे थे, इसके बाद उनके मुँह से सबसे पहला शब्द निकला:हे आइशा ख़ुश हो जाओ अल्लाह ने तुमको निर्दोष घोषित कर दिया है और वाणी उतारा है।

इस पर मैंने कहा:»अलहम्दुलिल्लाह» सभी प्रशंसा अल्लाह केलिए है।

अल्लाह ने यह आयतें उतारी:

إِنَّ الَّذِينَ جَاءُوا بِالْأِفْكِ عُصْبَةٌ مِنْكُمْ لا تَحْسَبُوهُ شَرًّا لَكُمْ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَكُمْ لِكُلِّ امْرِئٍ مِنْهُمْ مَا اكْتَسَبَ مِنَ الْأِثْمِ وَالَّذِي تَوَلَّى كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ * لَوْلا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بِأَنْفُسِهِمْ خَيْراً وَقَالُوا هَذَا إِفْكٌ مُبِينٌ * لَوْلا جَاءُوا عَلَيْهِ بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ فَإِذْ لَمْ يَأْتُوا بِالشُّهَدَاءِ فَأُولَئِكَ عِنْدَ اللَّهِ هُمُ الْكَاذِبُونَ

)जो लोग तुहमत घड़ लाए हैं वे तुम्हारे ही भीतर की एक टोली है ।तुम उसे अपने लिए बुरा मत समझौ, बल्कि वह भी तुम्हारे लिए अच्छा ही

है ।उनमे से प्रत्येक व्यक्ति केलिए उतना ही भाग है जितना गुनाह उसने कमाया, और उनमें से जिस व्यक्ति ने उसकी ज़िम्मेदारी का एक बड़ा हिस्सा अपने सिर लिया उसकेलिए बड़ी यातना है ।ऐसा क्यों न हुआ कि जब तुम लोगों ने उसे सुना था तब मोमिन पुरूष और मोमिन स्त्रियां अपने आपसे अच्छा गुमनाम करते और कहते कि «यह तो खुली तुहमत है « आख़िर वे इसपर चार गवाह क्यों न लाए? अब जबकि वे गवाह नहीं लाए, तो अल्लाह की दृष्टि में वही झूठे हैं।)

यह हदीस हज़रत आइशा से कथित हुई , और यह कहानी सही है इसे बुखारी और मुस्लिम दोनों ने उल्लेख किया है, और अल्बानी ने भी उल्लेख किया देखिए ‹फिक्हुस सीरा› पेज नंबर या संख्या २८८।

वह उन्हें इतना समय देते थे कि वे खुद को सजा सकें या संवार सकें

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह कहते हैं कि हम हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-के साथ एक लड़ाई से वापिस हो रहे थे, तो मैं अपनी एक दुबली ऊँटनी पर सवार हो कर जल्दी जल्दी वापिस हो रहा था इतने मैं एक सवार मेरे पीछे से आया और मेरे ऊंट को अपनी एक छड़ी से मारा तो मेरा ऊंट इतना तेज़ तेज़ दौड़ने लगा कि उतना तेज़ ऊंट आप कभी नहीं देखे होंगे, अचानक देखता हूँ कि वह तो हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- हैं, इसके बाद उन्होंने पूछा क्यों जल्दी कर रहे हो? तो मैंने कहा:मेरी अभी अभी शादी हुई है, इस पर उन्होंने पूछा:»किसी कुंवारी से या किसी शादीशुदाऔरतसे?
मैंने कहा: «एक शादीशुदाऔरतसे»इस परउन्होंने कहा:»तुमने किसी कुंवारी से क्यों शादीनहीं की? ताकितुम उसके साथ और वह तुम्हारे साथ कुछ दिल्लगी करते « हज़रत जाबिर कहते हैं :जब हम पहुँच गए तो हम घर में प्रवेश होना चाहे तो उन्होंने कहा: (अभी नहीं) रात को जाना ताकि वह कंघी कर सके और बाल उतार सके (मतलब साफ़ सुथरी हो सके)।

यह हदीस हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह के द्वारा कथित की गई, और यह हदीस सही है, इसे इमाम बुखारी ने उल्लेख किया है, देखिए बुखारी शरीफ पेज नंबर या संख्या: ५०७९।

बीमारी में उनके मनोविज्ञान को ध्यान में रखते थे

हज़रत आइशा कहती हैं : हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- अगर उनके परिवार के सदस्यों में से कोई बीमार पड़ जाता था तो उन पर चारों कुल(कुरान मजीद के आखरी भाग के चार छोटे छोटे सूरे) पढ़ कर फूंकते थे, इस को देख कर जब वह बीमार हुए थे जिस में उनका निधन हुआ तो मैं भी उन पर चारों कुल पढ़कर दम करती थी और उनके हाथ पर ही पढ़कर फूँकती थी और उनका अपना हाथ ही उन पर फिराती थी क्योंकि उनका हाथ मेरे हाथ से अधिक शुभ था।यह हदीस हज़रत आइशा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-के द्वारा कथित की गई , और यह हदीस सही है, इसे इमाम मुस्लिम ने उल्लेख किया है, देखिए मुस्लिम शरीफ पेज नंबर या संख्या: १४६९।

उन्हें अच्छी और खुशी की खबर दिया करते थे

हज़रत अबू-हुरैरा से कथित है कि हज़रत जिब्रील हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- के पास आए और बोल :यह खदीजा आई हैं उनके साथ एक बर्तन है उस में सालन या खाना या शरबत है , जब वह आपके पास पहुँच जाएं तो उनको उनके पालनहार और मेरी ओर से सलाम कहें , और उनको स्वर्ग में एक घर की खुशखबरी दे दीजिए जो घर मोती से बना है और जहां कोई शोरोगुल और थकन नहीं है।यह हदीस हज़रत अबू-हुरैरा-अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे-के द्वारा कथित की गई , और यह हदीस सही है, इसे इमाम बुखारी ने उल्लेख किया है, देखिए बुखारी शरीफ पेज नंबर या संख्या: ३८२०।

इसी तरह हज़रत आइशा से कथित है किहज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- ने मुझ से कहा:यह जिब्रील हैं आपको सलाम कहते हैं , तो मैं बोली :उनपर भी सलाम और अल्लाह की दया हो, और हज़रत जिब्रील हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो- के पास आए और बोल :यह खदीजा आई हैं उनके साथ एक बर्तन है उस में सालन या खाना या शरबत है , जब वह आपके पास पहुँच जाएं तो उनको उनके पालनहार और मेरी ओर से सलाम कहें , और उनको स्वर्ग में एक घर की खुशखबरी दे दीजिए जो मोती से बना है और जहां कोई शोरोगुल और थकन नहीं है।तो हज़रत पैगंबर-उन पर ईश्वर की कृपा और सलाम हो-ने उनको खुशखबरी दी और वह खुद भी इस पर खुश थे।

द्वारा तैयार

हज़रत पैगंबर मुहम्मद के बारे में जानकारी प्राप्त करने का यही उचित समय है।

www.rasoulallah.net